ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ
ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು – 570 006.

Karnataka State Open University
Manasagangothri, Mysore - 570 006.

आधुनिक हिन्दी गद्य एवं नाटक, निबन्ध, उपन्यास, कहानी

M. A. Previous HINDI
Course / Paper - III

तमस

Block - 6

ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕಾಗಿ ಇರುವ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣವನ್ನು ಪ್ರಜಾತಂತ್ರೀಕರಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸಲಾಗಿದೆ.

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ 1986

The Open University system has been initiated in order to augment opportunities for higher education and as an instrument of democratising education.

National Education Policy 1986

प्रथम एम.ए. - कोर्स तीसरा

Course - III, Paper - III

6

''आधुनिक गद्य एवं निबंन्ध, नाटक, नाटिका, एकाँकी, उपन्यास और कहानी साहित्य''

उपन्यास - ''तमस्''

Unit No. 22 to 26 **Page No.**

अनुक्रमणिका

इकाई 22	'तमस्' उपन्यास और भीष्म साहनी	1 - 34
इकाई 23	'तमस्' का कथासार	35 - 44
इकाई 24	उपन्यास की तत्वों की आधार पर 'तमस'	45 - 62
इकाई 25	'तमस्' उपन्यास में चरित्र-चित्रण	63 - 74
इकाई 26	उपन्यास कला के आधार पर 'तमस्' की विवेचना	75 - 98

पाठ्यक्रम अभिकल्प तथा संपादकीय समिति

प्रो.एम.जी.कृष्णन
उप कुलपति महोदय तथा
संपादकीय समिति के अध्यक्ष
क.रा.मु.वि.विद्यालय,
मैसूर - 6

प्रो.एस.एन.विक्रमराज अरस
डीन (शैक्षणिक) - संयोजक
क.रा.मु.वि. विद्यालय
मैसूर - 6

डॉ.कांबले अशोक संयोजक
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि.विद्यालय, मानस गंगोत्री
मैसूर - 6

डॉ.एम.विमला संपादिका
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
ज्ञानभारती, बेंगलूर विश्वविद्यालय
बेंगलूर - 56.

पाठ्यक्रम की लेखिका

डॉ.प्रतिभा मुदलियार
रीडर, हिन्दी विभाग
मैसूर विश्वविद्यालय
मैसूर.

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर, शैक्षणिक अनुभाग द्वारा निर्मित । सभी अधिकार सुरक्षित । कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना, इस कार्य के किसी भी अंश को किसी भी रूप में अनुलिपित या किसी अन्य माध्यम द्वारा प्रतिकृति नहीं किया जाएगा ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम पर अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर - 6 से प्राप्त की जा सकती है ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से **रजिस्ट्रार (प्रशासन)** द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ब्लाक परिचय

प्रिय विद्यार्थी,

कोर्स - एक में आपने **'कर्नाटक संस्कृति एवं कन्नड़ साहित्य'** का अध्ययन किया ।

कोर्स - दो में आपने **'आधुनिक हिन्दी काव्य'** के बारे में अध्ययन किया और कविवर 'जयशंकर प्रसाद', 'मैथिलीशरण गुप्त', 'रामधरी सिंह दिनकर' और 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' तथा 'नयी कवियों' के बारे में जानकारी प्राप्त कर लीं ।

अब आप **कोर्स - तीन** में **'आधुनिक गद्य एवं निबन्ध'** में हिन्दी के निबंध, नाटक, नाटिका, कहानी, एकांकी और उपन्यास के बारे में जानेंगे और **जयशंकर प्रसाद** विरचित 'ध्रुवस्वामिनी' **भारतेन्दु** कृत 'चन्दावली नाटिका' और 'हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्ध' तथा 'एकाँकी वैभव' का भी अध्ययन करेंगे । 'कहानी कौस्तुभ' नामक कहानी संकलन का भी अध्ययन करेंगे । इसके अलावा आप **जैनेन्द्र** कृत 'त्याग पत्र' तथा **भीष्म साहनी** का 'तमस्' उपन्यासों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे । इससे आपने आधुनिक गद्य तथा नाटक, नाटिका, एकाँकी और उपन्यास, कहानी से परिचित होंगे ही ।

कार्स तीन - ब्लाक - एक में आपने हिन्दी निबंध साहित्य, आचार्य शुक्ल और उनके निबंध - 'श्रद्धा-भक्ति' और 'उत्साह', हजारीप्रसाद द्विवेदी और उनके निबंध, विष्णु प्रभाकर के निबंध तथा विद्यानिवास मिश्र और उनके निबंध के

बारे में और **ब्लाक - दो** में आपने विष्णु प्रभाकर के निबंध, विद्यानिवास मिश्र और उनके निबंध एवं नाटिका चन्द्रावली के बारे में एवं **ब्लाक - तीन** में आपने नाटिका चन्द्रावली में प्रेम और भक्ति का स्वरूप, भाषा और काव्य-तत्व और नाटक ध्रुवस्वामिनी में नाटक का स्वरूप और विवेचन एवं नाटककार प्रसाद के बारे में तथा **ब्लाक - चार** में नाटककार प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी के प्रमुख पात्रों की परिचय और गौण पात्रों का परिचय के बारे में और **ब्लाक - पाँच** में उपन्यास का उद्‌भव और विकास, उपन्यास के तत्व, प्रकार, महत्व, उपन्यासकार जैनेन्द्र की उपन्यास कला, त्यागपत्र की कथावस्तु एवं त्यागपत्र में आदर्शवाद और यथार्थवाद के बारे में जानकारी प्राप्त कर लीं ।

अब आप **ब्लाक - छः** में 'तमस्' उपन्यास और भीष्म साहनी, कथासार, उपन्यासों की तत्वों की आधार पर 'तमस', चरित्र-चित्रण, उपन्यास कला के आधार पर 'तमस्' की विवेचना के बारे में जानकारी प्राप्त करने जा रहे हैं ।

शुभकामनाओं के साथ,

डॉ.कांबले अशोक
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि. विद्यालय
मानस गंगोत्री
मैसूर - 6

इकाई बाईस : 'तमस्' उपन्यास और भीष्म साहनी

इकाई की रूपरेखा

22.0. उद्देश्य

22.1. प्रस्तावना

22.2. भीष्म साहनी की जीवनी और व्यक्तित्व

- 22.2.1. लेखक और पारिवारिक संबंध
- 22.2.2. बाल्यकाल
- 22.2.3. लेखक और उनकी विविध उपलब्धियाँ (शिक्षा के संदर्भ में)
- 22.2.4. साहित्य के प्रति रुझान
- 22.2.5. विवाह और निजी परिवार
- 22.2.6. व्यापार बनाम नौकरी
- 22.2.7. लेखक की कृतियों का परिचय

22.3. भीष्म साहनी की उपन्यास-कला

22.4. उपन्यास-कला

- 22.4.1. कथावस्तु का चयन
- 22.4.2. वस्तु-संविधान, शिल्प और शैली

22.5. पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण

22.6. देशकाल और वातावरण-चित्रण

22.7. भाषा-शैली

22.8. शैली

22.8.1. नाटकीय शैली

22.8.2. व्यंग्यात्मक शैली

22.9. बोध प्रश्न

22.0. उद्देश्य

पिछले इकाई में आपने जैनेन्द्र कृत त्यागपत्र उपन्यास के बारे में अध्ययन किया और जैनेन्द्र की कला तथा त्यागपत्र की कथावस्तु तथा त्यागपत्र में आदर्शवाद तथा यथार्थवाद के बारे में अध्ययन किया ।

22.1. प्रस्तावना

अब आप इस इकाई में प्रसिद्ध उपन्यासकार भीष्म साहनी विरचित राजनीतिक उपन्यास 'तमस' तथा साहनी जी की जीवनी, व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में अध्ययन करेंगे ।

22.2. भीष्म साहनी की जीवनी और व्यक्तित्व

शब्द एवं अर्थ परस्पर अभिन्न रूप से संबद्ध हैं, शब्द यदि शरीर है, तो उसका अर्थ उसकी आत्मा । इन दोनों के मेल से ही साहित्य-रचना संभव है । एक की अनुपलब्धि में दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है । वास्तव में वे दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है, एक दूसरे पर अपने अस्तित्व के लिए परस्पर निर्भर हैं । इसी अर्थ में व्यक्ति और उसकी रचना भिन्न होते हुए भी एक ही है और विशिष्ट है । साहित्यकार और उसकी कृतियाँ एक ही चैतन्य से संबंधित हैं, जो उसकी रचनात्मकता के पीछे प्रच्छन्न रहते हैं । किसी भी लेखक व साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभवों से पृथक करके नहीं देखा व परखा जा सकता । भीष्मजी का व्यक्तित्व उनकी कृतियों में प्रतिबिंबित होता है, उसी प्रकार जिस प्रकार किसी रचनाकार के विचार, अनुभव, दृष्टिकोण, मान्यता आदि उनकी रचनाओं में तरल रूप में स्पष्ट होती है । इस कारण किसी साहित्यकार की मान्यताओं को समझने-बूझने के लिए उसके व्यक्तित्व पर गौर करना उसकी साहित्यिक विश्वासों एवं दृष्टिकोणों को स्पष्ट बना देता है ।

व्यक्तित्व में संपूर्ण व्यक्ति का समावेश होता है और व्यापक रूप से उसमें अनेक तत्वों का संगठन रहता है, जीवन शक्ति, सुंदर स्वास्थ्य, तीव्र बुद्धि, साहस, एकाग्रचित्त, व्यवहार कौशल, उत्साह, मौलिकता, निर्णय शक्ति, आत्म संयम, चरित्र, सामाजिक वृत्ति, सौभ्यता, संतुलन, स्वाभाविकता, आत्मविश्वास, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता । व्यक्तित्व के निर्माण में बुद्धि, विवेक, चरित्र, गुण तथा शरीर अपना-अपना योग देते हैं ।

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व एक सीधा सादा और साधारण व्यक्ति जैसा है । वह बड़े सादगी-भरे व्यक्ति रहे हैं । कोई दिखावा, कोई घमंड, या अहंकार नहीं कि मैं एक बहुत बड़ा लेखक हूँ या प्रोफेसर हूँ । वह सादगीपसंद सादामिजाज इंसान है । भीष्म के पास कोई हाशिया नहीं है ।

भीष्मजी बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं । कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, पत्रकारिता में आपने अपनी सफल एवं सशक्त लेखनी चलाई, दूसरी तरफ रंगमंच के जमे हुए कलाकार भी हैं । प्रत्येक लेखक की अपनी जीवन दृष्टि होती है, और उस दृष्टि से बनने में संस्कारों, अनुभवों, पठन-पाठन, मूल्यों, मान्यताओं, सभी का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है । अपने बारे में भीष्म जी ने लिखा है - मैं पढ़ाई में अच्छा था, हालाँकि उत्कृष्ट नहीं था । आठवीं जमात में जिले में चौथे नंबर पर आया जिसके लिए मुझे मैडल मिला । हमारे नगर में साल में एक बार घोड़ों की मंडी लगती थी, जिसमें फौज के लिए बढ़िया घोड़े खरीदे जाते थे । अच्छे पले हुए घोड़ों को इनाम दिए जाते थे । हुजूर डिप्टी कमिशनर इनाम देते थे । ऐसे ही एक समारोह में मुझे मैडल से विभूषित किया गया । अंग्रेज साहित्य बहादुर ने एक बढ़िया खच्चर के गले में मैडल डाला फिर मेरे गले में ।

अकसर लेखकों और कलाकार के बारे में यह कहा जाता है कि उसका जीवन संघर्षमय, कष्टकर जीवन की निम्नतम

सहूलियतों से वंचित होता है । केवल लेखन तथा कला के सहारे अपना निर्वहण करने वाले कलाकारों के लिए जीवन एक महा संग्राम-सा लगता है । उसे अपने क्षेत्र में जम कर खडे होने के लिए अपने-आपसे तथा परिस्थितियों से समाज से जूझना पड़ता है, लड़ना पड़ता है । भीष्मजी के बारे में यह तथ्य लागू नहीं होता । इसके विपरीत उनका जीवन निश्चित, संतुलित सुविधा प्राप्त जीवन था । जीने के स्तर पर भीष्म के पास सुधरा, सुरक्षित, मजबूत चौखटा है, जिसने भीष्म के समूचे लेखन और काफी हद तक जीवन दृष्टि को भी प्रभावित किया है । उनकी अपनी राजनीतिक आस्थाएं हैं । इटलेक्चुअल कमिटमेंट है । मोटे तौर पर भीष्म को अपने कितने साथियों से कहीं ज्यादा सुविधा और समग्रता जिंदगी में मिली है । छोटी-मोटी सुविधाएँ, अच्छा घर, पढ़ी-लिखी बीवी, किताबों से भरी शेल्फें और रचनाओं को एकसा करती एक बंधी बंधाई जिंदगी, जीवन के उस सुरक्षित पैटर्न ने जहाँ भीष्म को पनपने में मदद दी है, वहाँ लेखक के लिए जगने की जो जमीन सिर्फ चुनौतियों से बनती भीष्म के आगे से दूर कर दी है, हटा दी है । यही वजह है कि लेखन के स्तर पर भीष्म को यह लड़ाई कुछ दूसरे ढंग से लड़नी पड़ती है ।

व्यक्तिगत रूप से भीष्मजी एक गंभीर प्रकृति वाले शख्स है, स्वभाव से विनम्र, कोमल, मृदु । भीष्म ज़ी की पत्नी शीला साहनी ने भीष्म के बारे में लिखा है - भीष्म की एक बात है, जो अब तक मुझे अच्छी नहीं लगती, उनकी अत्यधिक विनम्रता । निम्रता अच्छी चीज है, मगर यह उसे बहुत दूर ले जाते हैं, जिसकी कोई जरूरत नहीं होती । विनम्र होना अच्छी बात है, परन्तु अति विनम्र होना तो अच्छा नहीं । लोग नाजायज फायदा उठाते हैं । यह सच है कि सीधे-सादे व्यक्ति का फायदा उठाया जाता है, लेकिन जो गुण स्वभाव में ढल गया है, उसका क्या करें । कुछ हालातों और संदर्भों में इन गुणों की कद्र होती है, एक अवगुण गुण बनकर व्यक्तित्व में चमक लाता है ।

भीष्म साहनी सशक्त, निर्भीक एवं साहसी साहित्यकार हैं । ..... भीष्मजी स्वभाव से जितने गंभीर हैं, उतने ही मृदु हैं, साथ ही उनकी सोच उतनी ही व्यापक हैं । फिल्म जगत के मशहूर अभिनेता जो भीष्म के बडे भाई भी हैं, लिखते हैं, भीष्म के मिजात में एक और खूबी मैंने यह देखी कि उसमें जल्दबाजी नहीं है । सोचकर और थोड़ा बोलता है । कहानी की कथावस्तु का चुनाव भी वह बड़े धीरज से करता है । साधारण लोगों के जीवन की छोटी-छोटी बातें वह खुद अपनी आँखों देखता है, उन लोगों की सामाजिक और व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है । पात्रों को कल्पना से नहीं, जीवन में से खोजता और चुनता है । लिखते समय भी वह यथार्थ से ज्यादा और अपनी कल्पना से कम काम लेता है । वह कहता है कि इस यथार्थ पद्म में ही कहीं रत्न-माणिक छिपा हुआ होता है, जो कलाकार का लेखक की प्यार भरी जोड-तोड के कारण कभी-न-कभी नंगा होकर अपनी चमक दिखा जाता है । भीष्म न तो किसी साहित्यिक वाद-विवाद में पड़ता है, और न ही किसी सिद्धान्त के आधार पर लिखता है । वह वही कुछ लिखता है, जो उसे खुद को अच्छा लगे, जो उसे खुद समझ आये । जो कुछ भी उसने आज तक लिखा है, ईमानदारी से लिखा है । उसकी कुछ कहानियाँ किसी भी सर्वोत्तम कहानी-संगह की शान बन सकती है ।

सादगी और सहजता भीष्म के व्यक्तिगत विशेषताएँ ही नहीं है, ये उनकी रचनाओं में स्पष्ट होते हैं । समूची नयी कहानी में सामाजिक चेतना के प्रति उन जैसा सहज और संपूर्ण लगाव शायद ही किसी का है । जैसे वे अपने संपूर्ण अस्तित्व को अपनी रचना में नियोजित कर देते हैं । यही कारण हैं कि उनकी कहानियों में कहानी की विधा का एक निराला बहाव और सादगी है ।

भीष्म साहनी अत्यधिक सजग लेखक हैं, समाज के विस्तृत धरातल पर पात्र, कथानक आदि उन्हें विशिष्ट परिस्थिति में पड़े दिख जाते हैं , जिनका चुनाव कर वे अपने साहित्य कंचन से एक

अनोखे अमूल्य आभूषण तैयार कर देते हैं । लेखक जौहरी जैसा होता है, जीवन के मोती चुनकर उन्हें कला के नग में डाल देता है और एक अपूर्व कला की सृष्टि करता है । भीष्मजी की रचनाएँ इसका सुंदर उदाहरण हैं ।

भीष्मजी की रचनाओं के अध्ययन से पूर्व उनके जीवन पर दृष्टिपात करना आवश्यक है, जिस परिस्थिति ने या संदर्भ ने उन्हें ऐसा व्यक्ति, रचनाकार बनाया जो वे आज हैं ।

22.2.1. लेखक और पारिवारिक संबंध

विश्व में दो ही शक्तियाँ हैं - तलवार और कलम और अंत में तलवार सदैव कलम से पराजित होती है । - नेपोलियन

अपनी सशक्त लेखनी से जिंदगी के युद्ध को सहर्ष खेलने वाले संघर्षरत लेखक का व्यक्तिगत परिचय यहाँ प्रस्तुत है । ''व्यक्ति अपने में संपूर्ण नहीं है, वह भी विशाल सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था का एक अंश है । पारिवारिक सीमाओं में, वातावरण की छाया में उसके चरित्र का निर्माण होता है । भीष्म साहनी का चरित्र और व्यक्तित्व, वातावरण, परिवार तथा सामाजिक परिवेश के घोल से उत्पन्न प्रभाव से बना है ।

भीष्म साहनी का जन्म **8 अगस्त 1915** को **रावलपिंडी** के साहनी परिवार में हुआ । परतंत्र भारत अपनी गुलामी की जंजीरों को काटने के प्रयास में निरत था । अनेक सामाजिक, राजनैतिक आंदोलन जोरों पर चल रहे थे । इन्हीं आंदोलनों में प्रमुख सामाजिक आंदालेन - आर्य समाज का कार्यक्रम पूरे वगे से भारत भर में फैल रहा था, उत्तर भारत में अपनी जड़े जत्ता रहा था । पंजाब भी उसी आंदोलन की छाया में प्रभावित था, ऐसे ही संदर्भ में व्यापारी परिवार में भीष्म जी का जन्म हुआ । पाँच लड़कियों के बाद एक लड़का, फिर सातवाँ बेटा भीष्म जी थे । भीष्मजी से बड़ा लड़का बलराज साहनी के नाम से प्रसिद्ध सिनेमा

के अभिनेता बना । भीष्मजी के जन्म लेने से पहले तीन बहनें स्वर्ग सिधार चुकी थीं, भीष्म जी के बचपन में ही एक और बहन चल बसीं । और कालेज तक आते-आते पाँचवी बहन भी । इस तरह माँ-बाप के लिए सात संतानों में केवल दो लड़के बचे रह गए, बलराज और भीष्म । भीष्मजी बचपन में अकसर बीमार रहा करते थे । उनकी माता उन्हें सुलाने अपनी गोद में उसका सिर रखकर, सिर थपथपाते हुए मोतीराम का वैराग्यपूर्ण बारहमासा गाया करती थी, जिसके बोल बड़े मीठे और अवसादपूर्ण हुआ करते थे । भीष्म के पिता मना करते हुए कहते थे बच्चों के कान में खुशी के गीत पड़ने चाहिए ।

अपनी माता के बारे में भीष्मजी लिखते हैं - उन दिनों माँ को वैराग्य के गीत गाना क्यों अच्छा लगता था, अब उसे समझना कठिन नहीं रहा । कहते हैं, जब घर में छठा बच्चा पैदा हुआ और वह लड़का निकला, तो माँ को यकीन नहीं आया और वह बेहोश हो गई थी । माता का इस सबसे छोटे तथा बीमार बेटे को देखकर बड़ी पीड़ा होती होगी , तथा आगे चलकर इस बच्चे पर उनका अपार स्नेह रहा होगा ।

भीष्मजी के पिताजी पेशे से व्यापारी थे, उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति अच्छी थी । रावलपिंडी में उन्हें बड़े सम्मान के साथ देखा जाता था । अपने पिता के बारे में भीष्मजी लिखते हैं - पिताजी ने जिंदगी गरीबी में शुरू की थी । वह आशावादी, पुरूषार्थ प्रेमी, आर्यसमाजियों में से थे, जो उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण की उपज माने जाते हैं, जिन्हें विश्वास था कि मनुष्य का चरित्र अच्छा हो, वह कर्मशील हो तो अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकता है । अपने पिताजी के कर्मठ स्वभाव और आत्मविश्वास पर भीष्मजी ने गर्व प्रकट किया है, यही गुण भीष्मजी ने तथा उनके भाई बलराज साहनी भी में पाये थे । इन दोनों भाइयों का संघर्षमय जीवन इस बात का मूक साक्षी है । पिताजी के व्यक्तित्व

का प्रभाव बालक भीष्म पर पड़ा, पिताजी के सामाजोन्मुख कार्यवाही का प्रभाव बलराज और भीष्म जी के संस्कार बनते गए ।

बचपन बड़ा कोमल, मासूम और हसीन होता है । कहते हैं कि बच्चे का मन मोम-सा नर्म होता है, उस पर पड़े आसपास के तथा घर के वातावरण का असर बड़ा गहरा भी होता है । अपने बारे में भीष्मजी कहते हैं - बहुत कुछ है जो अपने बचपन से हम संस्कार स्वरूप ग्रहण करते हैं, ज्यों-ज्यों बालक अपने परिवेश में आँखें खोलता है, जो-जो कुछ वह देखता-सुनता है, वही संस्कार बनता जाता है । आकाश की नीलिमा, ठंडी हवा के झोंके, गली में घूमते भिखारियों की आवाजें जहाँ कहीं कोई छोटी-सी घटना दिल की अथक चेतना को छू जाती है, वहीं अपनी छाप छोड़ जाती है । इसके अतिरिक्त बचपन में माता-पिता और घर के परिवेश का असर बहुत गहरा पड़ता है । मैंने जिस माहौल में **आँख खोली**, वह **'ठहरा' हुआ दौर नहीं था** । उसमें हलचल थी ; नए-नए विचार समाज को आंदोलित कर रहे थे । मेरे पिताजी आर्य समाजी विचारों के थे । घर के अंदर सदा समाज सुधार की चर्चा चलती रहती । दूसरी ओर भी स्वतंत्रता आंदोलन जोर पकड़ रहा था । जलसे-जूलूसों का जमाना था । भावनात्मकता से भरा वातावरण हमारे चारों ओर था । उसका प्रभाव मेरे लेखन पर जरूर पड़ा है ।

22.2.2. बाल्यकाल

जीवन रूपी बगिया की सुंदर नाजुक कली बाल्यकाल होता है, जो ख़ुद अपने आपकों तथा समूची वाटिका को मासूमियत और मुग्धता से भर कर उसे स्वर्ग-समान बना देता है । व्यक्ति के जीवन की सबसे सुंदर स्थिति उसका बाल्यकाल है । इस अवस्था को वर्षों पहले पार करने वाले प्रौढ़ उसकी याद बार-बार कर उसकी याद ताज़ा कर लेते हैं , उस स्मरण से उसे दुबारा जीने का प्रयास भी करते हैं । अपने बचपन का स्मरण भीष्मजी

करते हुए लिखते हैं - बचपन में मैं काफी शरारती था, खेल-कूद का भी शौकीन था । बालक भीष्म अकसर बीमार रहता था, मकान के ऊपरी हिस्से वाले कमरे में पडी खाट पर लेटे रहता था । इसके कान बड़े भाई के कदमों की आहट पर लगे रहते थे । घर में माँ-बाप, बड़ा भाई, दो बहने तथा नौकर तुलसी रहते थे ।

पिताजी आकर उसका ताप थर्मामीटर द्वारा देखते, बालक के सिर पर हाथ फेरते तकिये के नीचे इकन्नी या दुअन्नी रखकर चले जाते थे । माँ संत्संग चली जाती और बहनें, भाई अपने-अपने स्कूल । दोपहर भर वह उन सबके लौटने का इंतजार करता रहता । सामने वाले मकान की छाँव कहाँ तक पहुँची है देखकर समय का अंदाजा लगा लेता । भाई का इंतजार बेसब्री से करता था । मगर भाई स्कूल की छुट्टी के बाद कहीं खेल कर देर से लौटता था । भाई को देखते ही भीष्म का दिल बल्लियों उछलने लगता, उसके साथ खेलने की इच्छा होती । भाई को देखते ही दिल में हल्की-सी हूक उठती, वह खेलता रहता है । और मैं खाट पर पडा उसका रास्ता देखता रहता हूँ । भाई की तरह-तरह की बातें सुनकर भीष्म अंचभे में पड़ जाता और उसकी आँखें फैल जातीं । भाई की जोशभरी बातें सुन कभी-कभी वह ईर्ष्या में पड़ जाता । कभी-कभी भीष्म बाल-मन की कल्पना में उड़ने लगता । अपने भाई की याद करते हुए भीष्मजी ने लिखा है - मेरे मन में भाई के प्रति गहरा आदर भाव था । साथ में मैं उसके साहस, पहलकदमी, निर्भीकता से ईर्ष्या भी करता था । यह भी सही है कि बचपन में यह बात मेरे अंदर घर कर गई थी कि वह एक उत्कृष्ट व्यक्ति है और मैं उसकी तुलना में निकृष्ट हूँ । घरवालों ने भी इसे दूर नहीं किया । वह गोरे रंग का था मैं साँवला था, वह बड़ा स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट था, जबकि मैं बहुत दुबला था, और अकसर बीमार रहता था । वह पढ़ने में बहुत तेज था, जबकि मैं साधारण । स्कूल के उस्ताद हमारी तुलना करते हुए कहा करते

थे कि लालाजी के दोनों बेटों में नार्थ पोल और साउथ पोल का अंतर है ।

घर के वातावरण के बारे में भीष्म जी लिखते हैं - घर के अंदर संध्या के मंत्र गूँजते थे, ईश्वर स्तुति के भजन गूँजते थे । सादापन पर जोर था, और दूध-दही पर जोर था । ठंडे पानी से स्नान, सुबह, शाम पालथी मारकर संध्या करने पर, आज्ञा पालन पर जोर था । ....बड़ों का कहना मानो ..... बड़े भाई के साथ कदम मिलाकर नहीं चलते, पीछे-पीछे चलते हैं, जैसे राम-लक्ष्मण चला करते थे । घर के अंदर सदाचार के नियम टगे रहते थे - सादापन जीवन, सजावट मृत्यु है, सदाचार जीवन, दुराचार मृत्यु है ।

विचारों, विश्वास के बल-बूते पर भीष्म जी की वैचारिक मान्यताओं का महल खड़ा है । इसी समय दिल के अंदर लालसाओं-इच्छाओं के अंकुर फूटने लगे थे, कुछेक झुलसने भी लगे थे । बचपन के झुटपुटे में बहुत कुछ देखा-भोगा, पर जो ले-देकर पाया, वह था पाप-पुण्य के उपदेश, अंधेरे का डर, बड़ों का डर, भगवान का डर और अनगिनत अवसादपूर्ण तथा उल्लसपूर्ण यादें । सही अर्थों में भारतीय संस्कृति का एक नमूना भीष्मजी के घर में उनके बचपन में देखने को मिलता है ।

बचपन अल्हड़ होता है, मस्त होता है तथा स्वच्छन्द भी होता है । बेफिक्री का माहौल बना रहा पर आगे हरदम बड़े भाई बलराज रहे, जिसके पीछे लक्ष्मण की भाँति भीष्म चलते रहे । भाई अपने संघर्षों द्वारा मेरा रास्ता साफ करते जा रहे थे । बचपन में वह नये-नये खेल ढूँढ़ निकालते और मेरी आँखे उनमें नये-नये चमत्कार देखतीं । लगता, जैसे वह नये-नये दरवाजे खोलते चले जा रहे हैं । धीरे-धीरे मैंने छोटे भाई का दृष्टिकोण अपना लिया .... मुझे बना-बनाया दृष्टिकोण मिल गया था । अपने भाई का दृष्टिकोण जो मेरे मानसिक विकास में बाधक था । इस त्रुटि की पूर्ति भी साथ-साथ होती जा रही थी, आपस में उठने वाले

लड़ाई-झगडों द्वारा ..... और उस अपार स्नेह द्वारा, जो एक छोटे भाई को केवल अपने बड़े भाई से ही मिल सकता है । बड़े भाई के निर्देशन में बालक भीष्म का बौद्धिक तथा वैचारिक मन ढला, परन्तु बड़े होते-होते उन्होंने अपना स्वतंत्र मार्ग चुन लिया ।

22.2.3. लेखक और उनकी विविध उपलब्धियाँ (शिक्षा के संदर्भ में)

बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में और खासकर प्रथम दशक में भावरतवर्ष अनेक सामाजिक राजनैतिक आंदांलनों से मंद गति से उतरोत्तर बदलता जा रहा था । आर्य समाज का आंदोलन उनमें प्रमुख था । गुरूकुलों की स्थापना यत्र-तत्र हो गई थीं । ऐसे ही एक गुरूकुल में भीष्म तथा बलराज की शिक्षा का श्रीगणेश हुआ था । संस्कृत तथा हिदी का ज्ञान एक अध्यापक से हुआ, जो घर पर ही पढ़ाने आते थे । गुरूकुल छोड़कर अंग्रेजी पढ़ने स्कूल जाने लगे, तो उर्दू के माध्यम से पढ़ाई की । पंजाबी, हिन्दी, तथा संस्कृत का माहौल घर पर था । इस तरह अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी, संस्कृत तथा पंजाबी साहित्य भीष्मजी को पढ़ने को मिला । इन भाषाओं के माध्यम से कुछ अन्य भाषाओं के साहित्य को पढ़ने-समझने तथा आत्मसात करने का भी मौका मिला ।

भीष्मजी की स्कूली पढ़ाई रावलपिंडी में हुई, बी.ए. पढ़ने लाहौर गए, तथा अंग्रेजी में एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण हो कर वापस रावपिंडी लौटे । आठवीं जमात में चौथी नंबर पर आये थे जिसके लिए भीष्मजी को मेडल मिला था । अपने बारे में भीष्मजी लिखते हैं, मैं पढ़ाई में अच्छा था हालाँकि उत्कृष्ट नहीं था । एम.ए. के बाद पी.एच.डी. भी की ।

22.2.4. साहित्य के प्रति रुझान

बाल मन अकसर कथा-कहानियों के अनोखे जीवन में घूम-फिर कर आना चाहता है । माँ-दादी द्वारा कही कहानियाँ

उसकी बाल कल्पना को रंगीन बना देती है तथा वह परियों के संसार में उडता हुआ अपने आपको भूल जाता है । माँ के मुँह से सुनी कहानियाँ, बोबी की कहानी, तोत-तोती की कहानी, और उसके मुँह से सुने कवित्त और बारहमासे जरूर मन पर अमिट छाप छोड गये हैं । भीष्म जी का भावुक मन अपने इर्द-गिर्द होने वाले अनेक, किस्से-कहानियों से प्रभावित होते थे । किसी प्रभावशाली व्यक्तित्व का प्रभाव उनके मनपर गहरा पड़ जाता था ।

बालक भीष्म पर जादू डालने वाले पहले साहित्यकार पं.सुदर्शन थे । आर्य समाज के किसी वार्षिकोत्सव पर आकर भाषण दे गए थे और भीष्म का दिल लूटकर ले गए थे । उनका गोरा - चिट्टा चेहरा, सुनहरे फ्रेम का चश्मा, भरपूर जवानी और आकर्षक व्यक्तित्व आज भी आँखों के सामने आ जाते हैं । सुदर्शन के व्यक्तित्व से भीष्म जी प्रभावित हुए थे, मगर साहित्य रचना की प्रेरणा जसवंत राय नामक अंग्रेजी के अध्यापक ने दी । जसवंत राय बड़े सुंदर व्यक्तित्व के स्वामी थे । साहित्य में उनकी विशेष रूचि थी । अंग्रेजी कविता पढ़ाते थे । अंग्रेजी कविता पढ़ाते तो एक अद्‌भुत संसार आँखों के सामने खुलता था । उनसे बड़ी प्रेरणा मिली । भीष्म जी की फुफेरी बहने सत्यवती भल्लिक तथा पुरूषार्थकता लेखिकाएँ थी । पुरूषार्थवती के पति चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ख्याति प्राप्त लेखक हैं । परिवार के माहौल तथा जैविक अंश, दोनों के मेल से भीष्म जी ने लेखनी अपने हाथो में ऐसे पकड़ी कि जीवन भर उसे हाथ से जाने नहीं दिया ।

साहित्यवाचन का शौक बचपन से ही भीष्म जी को था । प्रेमचंद और सुदर्शन उनके प्रिय लेखक थे । उनकी रचनाएँ ढूँढ़-ढूँढ़ कर पढ़ते थे । प्रेमचन्द का मेरे ऊपर गहरा प्रभाव है । अब भी है । उनकी कहानियों के कुछ पात्र या स्थितियाँ मुझे हाँट करती रही । साहित्य में अभिरूचि भीष्म को कहानी लिखने के लिए प्रेरित कर रही थी और घर लौटते हुए एक दिन किसी मार्मिक घटना देखकर भीष्मजी ने उस घटना पर आधारित एक

कहानी लिखी थी । इस तरह यथार्थ से उठाई गई कथानक को कहानी का बाना पहनाकर 'लेखक' बन जाने का श्रीगणेश किया । इस तरह हिन्दी साहित्य के विशाल प्रांगण में भीष्मजी ने प्रवेश किया ।

22.2.5. विवाह और निजी परिवार

अकेला व्यक्ति अधूरा होता है, विवाह उसके लिए जीवन में पूर्णता लता है । भीष्म जी का विवाह शीला के साथ हुआ जो एक पुलिस अफसर की बेटी थी । उसने पहली बार भीष्म जी को एक नाटक में अभिनय करते देखा, भीष्म जी ने उसे रावलपींडी के डी.ए.वी. कालेज में अंग्रेजी पढ़ाया । क्लास में पहली मुलाकात हुई । नाटक में अभिनय तथा क्लास में अच्छी तरह पढ़ाया करते थे । शीला जी अपने बारे में कहती हैं - 1944 में मैं बीस बरस की थी और भीष्म जी 28 बरस के थे । एम.ए. की परीक्षा देने के पाँच दिनों बाद हमारी शादी हुई थी । हालाँकि भीष्म जी की सगाई उनके माता-पिता ने बचपन में ही किसी और लड़की के साथ तय कर दी थी । वह लड़की काफी मोटी-तगड़ी थी । वह पढ़ी-लिखी नहीं थी । भीष्म जी ने मुझे पसंद किया था । इस तरह जिंदगी के लंबे सफर के लिए भीष्म जी ने अपनी अर्धांगिनी का चुनाव किया था, और शीला जी ने भी पति का साथ सहर्ष दिया था, सुख में, दुख में, कष्ट में एवं हर्ष में । उनका परिवार छोटा परिवार था, एक पुत्र तथा एक पुत्री । दोनों ही उच्च शिक्षा प्राप्त प्रतिष्ठा प्राप्त अपने जीवन की निर्दिष्ट मंजिलों की ओर बढ़ते जा रहे हैं ।

22.2.6. व्यापार बनाम नौकरी

लाहौर में एम.ए. की पढ़ाई पूरी कर भीष्म जी वापस परिवार में आ शामिल हुए । आपके पिता जी का बसा-बसाया व्यापार था, जिसे बलराज संभाल रहे थे । भीष्म जी के वापस रावलपिंडी आने पर बलराज जी अपनी किस्मत आजमाने तथा

स्वतंत्र रूप से आजीविका चलाने 'शांतिनिकेतन' चले गए । भीष्म जी को पिता का व्यापार संभालना पड़ा । व्यापार करना उनकी मजबूरी थी, काम करते करते उनका मन जल्दी ही उचट गया । व्यापार से छुटकारा मिलना संभव नहीं था । ऐसी ही स्थिति में उन्होंने रावलपिंडी में ही एक नाटक मंडली की स्थापना की, व्यापार की ऊब से भागकर नाटक में भाग लेने लगे । साथ ही स्थानीय डी.ए.वी. कालेज में अंग्रेजी पढ़ाने लगे । इतना ही नहीं, समाज तथा राष्ट्र में होने वाली गतिविधियों के साथ-साथ चलते, कांग्रेस में काम करने लंगे थे । कुछ हद तक व्यापार से होने वाली ऊब से भीष्म जी को छुटकारा मिल जाता था ।

व्यापार से निजात तब मिली, जब देश का बँटवारा हो गया । जब मैंने सचमुच बड़ा आजाद महसूस किया । इससे पहले छोड़ सकता था, अगर विरोध करता, पर न तो विरोध करने की हिम्मत ही थी और न ही मन मानता था । व्यापार की घुटन, नाटक खेलने, कांग्रेस में काम करने और कालेज में पढ़ाने से बहुत कुछ कम हो गई थी ।

भारत को आजादी मिली और उस हर्षोल्लास में पड़े भारतीय जनता को बँटवारे के रूप में अनेक धक्के खाने पड़े । देश को बँटवारे की त्रासदी भोगनी पड़ी । लाखों लोग बेघर हुए, अपनी पैतृक जमीन, घर-बार छोडकर अनजान देश की तरफ चल पड़े । पाकिस्तान के रहने वाले हिन्दू भारत की ओर तथा भारत में रहने वाले मुसलमान पाकिस्तान की ओर चल पड़े । इसी बीच सांप्रदायिक दंगा प्रारंभ हुआ, जिसपर काबू रखने सरकार को बड़ी कठिनाई हुई । भीष्मजी ने बँटवारे के संदर्भ में, दंगों के संदर्भ में कांग्रेस में काम करते वह मानव को दानव बनते देखा, दंगों की विकट परिस्थिति देखी इस स्थिति की असीम पीड़ा को भोगते हुए वे अपने परिवार समेत भारत आये । भाई बलराज के साथ रहने लगे । शीला जी को दिल्ली में नौकरी मिली, वह दिल्ली में आकर

रहने लगी । भीष्मजी को भी अंग्रेजी प्राध्यापक की नौकरी दिल्ली के कालेज में मिल गई । तथा स्थायी जीवन का प्रारंभ हुआ ।

प्रिंसिपल की सिफारिश से भीष्मजी को विदेश जाने का मौका मिला । मास्को के विदेशी भाषा प्रकाशन गृह में अनुपादक के रूप में सात वर्ष रहकर अनेक रूसी पुस्तकों का अनुवाद किया । वापस दिल्ली आकर अध्यापन कार्य में निरत रहे और निवृत्त होने तक पढ़ाते रहे ।

अध्यापन कार्य से निवृत्त होकर साहित्य सेवा कार्य निरत हैं । पचासी वर्ष की उम्र में भी काफी सक्रिय रूप से लेखन कार्य जारी रखा है । हाल ही में एक कहानी संग्रह तथा एक उपन्यास छपकर निकले हैं । भीष्मजी की लेखनी में अभी खूब स्याही भरी है, उनसे उत्कृष्ट साहित्य सृजन की आशा की जाती है ।

22.2.7. लेखक की कृतियों का परिचय

भीष्मजी की रचनाएँ दो प्रकार की हैं :-

1. अनूदित रचनाएँ
2. मौलिक रचनाएँ

उपन्यास :

झरोखे (1967)
कडियाँ (1970)
तमस (1973)
बसंती (1980)
मय्यादास की माडी (1988)
कुंतो (1993)
नीलू नीलिमा नीलोफर (2000)

कहानी संग्रह : भाग्यरेखा (1953)
पहला पाठ (1956)
भटकती राख (1966)
पटरियाँ (1973)
वाङ्चू (1978)
शोभायात्रा (1981)
निशाचर (1983)
पाली (1989)
डायन (1998)

नाटक : हानूश (1977)
कबिरा खड़ा बाजार में (1981)
माधवी (1984)
मुआवजे (1993)

निबंध संग्रह : अपनी बात (1989)

बाल साहित्य : गुलेल का खेल (1980)
वापसी

जीवनी : मेरे भाई बलराज

पुरस्कार : 'तमस' उपन्यास पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार (1975)
'लेखक शिरोमणि' पुरस्कार - पंजाब सरकार के भाषा विभाग (1975)
'लोटस' पुरस्कार - एफ्रो एशियायी संघ (1980)
सम्मन तथा पुरस्कार - दिल्ली प्रदेश साहित्य कला परिषद द्वारा
हानूश, कबिरा खड़ा बाजार में, तथा झरोखे पर इनाम ।

भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों द्वारा सांप्रदायिक दंगे की भूमिका प्रस्तुत करना और दंगों के परिणामस्वरूप भीषण विनाश लीला का दृश्य प्रस्तुत करना है । साहनी जी ने सारे उपन्यास में इसी केन्द्र पर कथानक का गटन किया है । अंग्रेजों ने अपने शासन के 200 वर्षों में 'फूट डालो और राज्य करो' के सिद्धांत को अपनाया । मुरादअली के माध्यम से अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड नत्थू से सुअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा देता है । प्रतिक्रियास्वरूप मुसलमान गाय को काटकर धर्मशाला के सामने फेंक देते हैं । परिणाम स्वरूप सारे शहर और फिर उसके पश्चात् कस्बे और ग्रामों में भीषण साम्प्रदायिक दंगा फैल जाता है । डिप्टी कमिश्नर इसे रोकने का कोई प्रयास नहीं करता है । जब भीषण नर-संहार हो चुकता है, तभी शांति-व्यवस्था का प्रयास किया जाता है । पुलिस की चौकियाँ बिठाई जाती हैं । अमन कमेटी की स्थापना कराई जाती है । सारी घटना पर अंत में उपन्यासकार यही निष्कर्ष निकालता है कि - "फिसाद कराने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज ।"

'तमस' में ऐसी घटनाओं की संयोजना है, जो अंग्रेजों की इस कूटनीति को सामने ला देती हैं । उन्होंने बड़ी चतुराई से धर्म के नाम पर विष-वमन कराकर हिन्दू-मुसलमानों में दंगे कराये, मुसलमानों को प्रसेत्साहन देकर मुस्लिम-लीग की स्थापना कराई, जिसने काँग्रेस को हिन्दुओं की संस्था घोषित किया और काँग्रेस में सम्मिलित मुसलमानों को हिन्दुओं का पालतू कुत्ता घोषित किया । अंग्रेजों की इस नीति का ही परिणाम हुआ कि देश में भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए और देश के हिन्दुस्थान एवं पाकिस्तान के रूप में दो टुकड़े हो गये । रिचर्ड और उसकी पत्नी लीजा के निम्नलिखित कथोपकथन में उपर्युक्त सत्य स्पष्ट हो जात है ।

'तुम कोई भी बात मेरे साथ संजीदगी से नहीं करते ।' लीजा ने उलाहना के स्वर में कहा ।

'संजीदगी से बात करने का तुक ही क्या है ।' रिचर्ड ने खोये-खोये मन से कहा । 'सुनो लीजा, यहाँ पर शायद कोई गड़बड़ हो ।'

'लीला ने आँखें ऊपर उठाई और रिचर्ड के चेहरे की ओर देखने लगी ।

'क्या गड़बड़ होगी ? फिर जंग होगी ।'

'नहीं, मगर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनातनी बढ़ रही है । शायद फसाद होंगे ।'

'ये लोग आपस में लड़ेंगे ? लन्दन में तो तुम कहते थे कि ये लोग तुम्हारे खिलाफ़ लड़ रहे हैं ।'

'हमारे खिलाफ भी लड़ रहे हैं और आपस में भी लड़ रहे हैं ।'

'कैसी बात कर रहे हो ? क्या फिर मजाक करने लगे ?'

'धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं । देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं ।' रिचर्ड ने मुस्कराकर कहा ।

'बहुत चालाक नहीं बनो, रिचर्ड, मैं सब जानती हूँ । देश के नाम पर वे लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो, क्यों ठीक है न ?'

'हम नहीं लड़ाते, लीजा, ये लोग खुद लड़ते हैं ।'

'तुम इन्हें लड़ने से रोक भी तो न सकते हो । आखिर हैं तो ये एक ही जाति के लोग ।'

'डार्लिंग, हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते कि प्रजा कौन-सी समानता पायी जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक-दूसरे से अलग हैं ।'

कथानक का विकास इसी वार्तालाप के केन्द्र में होता है । रिचर्ड सुअर को मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा देता है । प्रतिक्रिया स्वरूप मुलसमान गाय काटकर धर्मशाला के बाहर

डाल देते हैं । बस हिन्दू-मुसलमानों में तना-तनी बढ़ जाती है । हिन्दू और मुसलमान दोनों के नेता रिचर्ड की कोठी पर जाकर सारी स्थिति को बताते हैं और सुरक्षा का कदम उठाने का आग्रह करते हैं परंतु रिचर्ड को तो दंगा कराना ही था, न वह करफ्यू लगाता है और न पुलिस आदि का ही समुचित प्रबंध करता है । वह जन-प्रतिनिधियों को जो व्यंग्यपूर्ण जवाब देता है, उससे उसकी बुरी मंशा प्रकट हो जाती है ।

''सरकार तो बदनाम है । मैं अंग्रेज अफसर हूँ । ब्रिटिश सरकार पर तो आपको विश्वास नहीं है, उसकी बात को तो आप कहाँ सुनेंगे !'' रिचर्ड ने व्यंग्य से कहा और पेन्सिल टकोरता रहा ।''

''मगर तातक तो ब्रिटिश सरकार के हाथ में और आप ब्रिटिश सरकार के नुमाइन्दा हैं । शहर की रक्षा तो आप ही की जिम्मेदारी है ।''

बख्शीजी बोले और बोलते हुए उनकी ठुड्डी काँप गयी और उत्तेजनावश चेहरा पीला पड़ गया ।

''ताकत तो इस वक्त पण्डित नेहरू के साथ में है '' रिचर्ड ने फिर मुस्कराकर धीमे से कहा । फिर बख्शीजी की ओर देखकर बोला, ''आप लोग ब्रिटिश सरकार के खिलाफ, भी दोष ब्रिटिश सरकार का और जो आपस में लड़ें तो भी दोष ब्रिटिश सरकार का ।'' उसके होंठों पर मुस्कान बराबर बनी रही । पर वह फिर जैसे सँभल गया और बोला, ''लेकिन कहिए, हमें मसले को मिलकर सुलझाना चाहिए ।'' और उसने हयातबख्त की ओर देखा ।''

रिचर्ड महज अमन कमेटी बनाकर शांति-स्थापना के लिए प्रतिनिधियों को सलाह देता है । शहर में भीषण साम्प्रदायिक दंगा फूट पड़ता है । अंग्रेजी सरकार की ओर से दंगा रोकने और जनता की रक्षा का कोई प्रबंध नहीं होता । रिचर्डा दंगों और

भीषण नर-संहार के समाचार सुनकर लीजा के साथ ठिठोलियाँ करता है ।

सांप्रदायिक दंगे की भीषण ज्वाला की लपटें देहांत और कस्बों को भी अपने में समेट लेती हैं । गाँव के गाँव भीषण दंगों में साफ हो जाते हैं -

धर्म के नाम पर हिन्दू-मुसलमानों में भीषण साम्प्रदायिक दंगा कराकर और भीषण नर-संहार हो जाने पर वह कूटनीतिक चाल चलता है । हवाई जहाज उड़ कर शांति की घोषणा करता है, अमन कमेटियाँ बिठाई जाती हैं, हानि की लिखा पढ़ी होती है । अंग्रेजों की नीति से अमन कमेटी में भी एकता नहीं रह पाती । मुसलमान काँग्रेस को हिन्दुओं की संस्था घोषित करते हैं । मुस्लिम लीग पाकिस्तान का प्रश्न उठाती है ।

उपर्युक्त उद्देश्य के केन्द्र पर ही कथानक प्रारंभ होता है । कमेटी के जमादार मुरादअली से पाँच रुपये लेकर नत्थू भंगी सलोतरी साहब के लिए सुअर मारता है । यह सुअर काटकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा दिया है । इस प्रकार अंग्रेज अधिकारी सांप्रदायिक दंगे का बीज वपन कर देते हैं । इसकी प्रतिक्रिया मुसलमानों की तरफ से तत्काल होती है । एक गाय मारी जाती है और धर्मशाला में डाल दी जाती है । शहर में सांप्रदायिक दंगे की तनातनी बढ़ जाती है । हिन्दू और मुसलमान दोनों पक्ष तैयारी में लगा जाते हैं । कुछ नेता कलक्टर रिचर्ड के बीज उसी के द्वार बोये गये थे । वह शांति स्थापना से तटस्थ रहता है और सांप्रदायिक दंगा सारे शहर में फूट पड़ता है । कथानक का प्रारंभ दंगे के इसी प्रारंभ से होता है । इसके पश्चात् दंगाइयों द्वारा जो भीषण रक्तपात किया जाता है तथा आगजनी होती हे, उससे कथानक विकसित होता चला जाता है । पूरा शहीर दंगे की लपटों में जल उठता है । उपन्यासकार ने सांप्रदायिक दंगे का आँखों देखा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है ।

उपन्यास के प्रथम भाग में शहर के दंगे का व्यापक रूप सामने आता है । उपन्यास के द्वितीय खण्ड में सांप्रदायिक दंगा कस्बों और ग्रामों में भी फैल जाता है । कोई भी ग्राम अथवा कस्बा दंगे से अछूता नहीं बचता । अल्प-संख्यक गाँव छोड़कर भाग खड़े होते हैं । उनकी दुकानें और सम्पत्ति को दंगाई लूट लेते हैं । दंगाई अल्प-संख्यकों की स्त्रियों और लड़कियों को भी लूट ले जाते है । बहुतों को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया जाता है । बहुत सी सिख स्त्रियाँ कुएँ में कूदकर अपनी इज्जत बचाती है । भीषण विनाश के पश्चात् अंग्रेज बहादुर की शांति की चेतावनी निकलती है और शांति स्थापित हो जाती है ।

उपन्यासकार ने दंगा सामप्त होने के पश्चात् का भी सजीव वर्णन किया है । निम्नलिखित उदाहरण में रिलीफ ऑफिस का दृश्य द्रष्टव्य है -

"रिलीफ ऑफिस के आँगन में धूमता प्रत्येक व्यक्ति अपना विशिष्ट अनुभव लेकर आया था । लेकिन उस अनुभव को जाँचने, परखने, उसमें से निष्कर्ष निकालने की क्षमता किसी में नहीं थी । शून्य में ताकने, सिर हिला-हिलाकर हर किसी की बात सुनते रहने के अलावा किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था । एक अफवाह उठती तो आँगन में लोग उठ-उठकर उसे सुनने के लिए जमा हो जाते । कोई नहीं जानता था कि उसे क्या करनार है, किधर जाना है । आगे क्या होगा, उसकी धुंधली-सी रूपरेखा भी किसी की आँखों के सामने नहीं थी । लगता जैसे कोई अनिवार्य घटना-चक्र चल रहा है, जिस पर किसी का कोई बस नहीं है, न किसी के हाथ में निर्णय है, न संचालन, न संचालन की क्षमता, कठपुतलियों की तरह सभी घूम रहे थे, भूख लगती तो उठकर इधर-उधर से कुछ खा लेते, याद आती तो रो देते, और कान लगाये सुबह से शाम तक लोगों की बातें सुनने रहते ।"

दंगे के पश्चात् शहर में मुस्मिल-बहुल मुहल्लों से हिन्दू और हिन्दू-बहुल मुहल्लों से मुसलमान जायदाद बेचकर भागन लगे ।

''शहर में फिसाद होने के बाद एक लहर-सी चल पड़ी थी, जिस इलाके में मुसलमानों की अक्सरियत थी, वहाँ हिन्दू-सिख निकलने लगे थे, और जिन इलाकों में हिन्दू-सिखों की अवसरियत थी, वहाँ से मुसलमान घर-बाहर बेचकर निकल जाना चाहते थे ।''

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि उपन्यासकार को उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्ण सफलता मिली है । अंग्रेजों की नीति के संबंध में बख्शी जी का निम्नलिखित कथन सर्वथा सत्य है -

''फिसाद करवाने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज ।'' पर जब ये फिसाद शुरू हुए थे बख्शी जी के दिमाग में धूल-सी उड़ने लगी थी, बस केवल इतना-भर ही बार-बार कहते रहे, अंग्रेज फिर बाजी ले गया, अंग्रेज फिर बाजी ले गया ।' पर शुरू से आखिर तक स्थिति उनके काबू में नहीं आयी ।''

22.3. भीष्म साहनी की उपन्यास-कला

साहनी जी का जन्म रावलपिण्डी (प.पाकिस्तान) में सन् 1915 ई. में हुआ था । आपके पिता का नाम हरवंशलाल है । राष्ट्रीय आंदोलन और देश-विभाजन की घटनाओं का आप पर गहरा प्रभाव पड़ा । सन् 1957 से सन् 1968 तक आपने मास्को के विदेशी-भाषा प्रकाशन-गह में अनुवादक रूप में काम किया है और टालस्टाय आदि की रचनाओं के अनुवाद किये । वर्तमान में दिल्ली कॉलेज में अंग्रेजी के वरिष्ठ प्रवक्ता के पद पर हैं ।

साहनी के तीन कहानी-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं - भाग्य रेखा, पहला पाठ और भटकती राख । झरोखे, कड़ियाँ, तमाचे, तमस आदि उपन्यास भी आपने लिखे हैं ।

22.4. उपन्यास-कला

भीष्म जी मानवीय संवेदनाओं के कलाकार हैं । आपकी

उपन्यासों में निम्न और मध्यमवर्गीय परिवारों के अंतरंग चित्र बड़े मार्मिक रूप में प्रस्तुत हुए हैं । उनके उपन्यासों के विषय जाने-पहचाने होते हैं । व्यंग्य और करुणा आपके उपन्यासों में प्रमुख गुण है । आपकी कथा-शैली में सरलता और सहजता का गुण मिलता है । प्रभाव की दृष्टि से आपके उपन्यास बेजोड़ होते हैं । आपके उपन्यासों की भाषा व्यावहारिक हिन्दी है । उर्दू और अंग्रेजों के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है । विषय-वस्तु समाज-परक है ।

साहनी जी ने अपने उपन्यासों में वर्णात्मक शैली को प्रधानता दी है । यह वर्णात्मक शैली चित्र विधायनी है । घटना और वातावरण का सजीव चित्र उपस्थित हो जाता है । 'तमस' का कथानक अंग्रेजों द्वारा कराये गये दंगों पर आधारित है । अतः दंगों की पृष्ठभूमि, घटनाक्रम, मारकाट, हिंसा एवं विनाश का सजीव चित्र वर्णात्मक शैली में प्रस्तुत हो गया है । भीष्म साहनी की उपन्यास-कला का विश्लेषण निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकत है :

22.4.1. कथावस्तु का चयन

साहनी जी अपने उपन्यासों की कथावस्तु का चयन तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक वातावरण से करते हैं । 'तमस' में अंग्रेजों द्वारा सांप्रदायिक दंगे का सूत्रपात कराके कथानक का विस्तार करते हैं । प्रथम भाग में कथानक शहर के दंगों और मारकाट को सामने लाता है । दूसरे भाग में कथानक कस्बों और ग्रमों तक विस्तार कर जाता है । इस प्रकार कथानक की पृष्ठभूमि बहुत विस्तृत हो जाती है ।

साहनी जी के उपन्यासों की वस्तु-संयोजन में अतिरंजना और कल्पना के स्थान पर अनुभूति की प्रधानता है । वस्तु-संयोजना में एक ऐसी दृढ़ता रहती है कि बीच में न तो शिथिलता आती है और न कथानक की श्रृंखला ही टूटती है ।

घटनाएँ इस क्रम से आती हैं कि कथानक में एकरूपता स्थापित हो जाती है । साहनी जी के उपन्यासों में कथावस्तु से संबंधित निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

1. अनुभूति के आधार पर कथावस्तु का संयोजन हुआ है ।
2. घटनाओं की सुनियोजित योजना है ।
3. जिज्ञासा और कुतूहल ने कथावस्तु को आकर्षण प्रदान किया है ।
4. अहिंसा, दया, मानवता, उदारतस, विनम्रता आदि का विकास कथानक में सर्वत्र मिलता है ।
5. कथावस्तु में स्तर की दृष्टि से एकरूपता पाई जाती है । उसका क्षेत्र विस्तृत होता जाता है ।

कथानक का प्रारंभ साहनी जी कहीं-कहीं कोई चित्रण उपस्थित कर, कहीं किसी घटना को सामने लाकर और कहीं प्रकृति-वर्णन द्वारा करते हैं । परंतु अधिकांश उपन्यासों के कथानक का विकास घटना-चित्रण से होता है । 'तमस' में कथानक का प्रारंभ नत्थू द्वारा कोठरी में सुअर मारने की घटना से होता है ।

साहनी जी के उपन्यासों में कथानक का अंत भी अर्थपूर्ण हुआ है । अंत में सारांश देने की प्रवृत्ति कहीं नहीं मिलती । वे या तो किसी दार्शनिक वाक्य से कथानक की समाप्ति करते हैं या वे कोई ऐसा वाक्य लिख देते हैं कि जिज्ञासा से भरकर पाठक सोचता रह जाता है । तीन चौथाई कथानक समाप्त होने पर समस्त घटनाएँ बड़ी तेजी से समाप्ति की ओर बढ़कर एक हो जाती हैं । 'तमस' में कथानक सिमटता हुआ अमन-कमूटी में बदल जाता है ।

22.4.2. वस्तु-संविधान, शिल्प और शैली

साहनी जी के उपन्यासों के कथानक का प्रारंभ, विकास और अंत बड़ा स्वाभाविक हुआ है । वे जिस पात्र अथवा समस्या

का आधार लेकर चलते हैं, उनका कथानक उसकी समाप्ति के साथ ही समाप्त हो जाता है । शिल्प की दृष्टि से 'तमस' का विशेष महत्व है । साहनी जी कुशल उपन्यासकार हैं । कथावस्तु के संगठन में कहीं भी शिथिलता नहीं आने पाई है ।

साहनी जी के उपन्यासों की शैली में अनेकरूपता और नाटकीयता है । उनकी मनोवैज्ञानिक शैली अतिव्याप्ति के दोष से मुक्त, शालीन तथा सरल और स्पष्ट है । इसमें प्रायः मन की विभिन्न घाटियों का चित्रण पाया जाता है ।

साहनी जी के उपन्यासों में प्रयुक्त संवाद-शैली में इतनी विविधता पाई जाती है कि पाठक का हृदय मुग्ध हो जाता है । पाठक का मन जिज्ञासा से भर जाता है । इस शैली में सरल, सुस्पष्ट भाषा का प्रयोग हुआ है । कहीं-कहीं पर हास्य का पुट मिलता है । प्रश्नोत्तर शैली में व्यंजना की प्रधानता है । सर्वत्र नाटकीयता पाई जाती है । संवादों में प्रायः जीवन-दर्शन का स्पष्टीकरण हुआ है ।

22.5. पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण

साहनी जी ने अंग्रेजी-शासन द्वारा कराये गये सांप्रदायिक दंगों का व्यापक पट प्रस्तुत किया है । अतः पात्रों में सभी वर्ग के पात्रों को प्रतिनिधित्व मिला है । दंगे का प्रसार शहर से लेकर ग्रामों तक हो गया, अतः पात्रों को सामान्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

1. शहरी पात्र : इनमें दूकानदार, सेठ, साहूकार तथा आम जनता के सभी वर्ग के पात्र हैं ।

2. ग्रामीण पात्र : साम्प्रदायिक दंगों का प्रसार जिन ग्रामों में दिखाया गया है, उनमें प्रायः मुसलमानों और सिखों की आबादी है ।

मुसलमान अपेक्षाकृत अधिक हैं । अन्य जातियों के भी जन हैं ।

साम्प्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि राजनीतिक है । ये दंगे अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड द्वारा कराये हुए हैं । इसमें मुस्मिल लीग और काँग्रेस के दो पक्ष स्पष्ट हो गये हैं । तीसरा झगड़ा कराने वाला वक्ष अंग्रेजों का है ।

उपर्युक्त पार्टियों का तनाव ही साम्प्रदायिक दंगे का कारण बनता है । कथानक के अंत में जो अमन-कमेटी बनती है, उसमें आर्यसमाज, ईसाई, सिख आदि पात्र भी सम्मिलित किये जाते हैं । इस प्रकार आलोच्य उपन्यास में पात्रों की संख्या बहुत अधिक हो गई हैं । इसमें प्रत्येक वर्ग के पात्र मिलते हैं, जो अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुछ पात्र अपनी विशिष्ट मानवीय उदात्त भावनाओं को लेकर सामने आये हैं । राजो हरनामसिंह और उसकी पत्नी बंतो की रक्षा ही नहीं करती अपितु उनकी सुरक्षित रूप में उनके गाँव भी भेज देती है ।

पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से साहनी जी के उपन्यास सफल हैं । पात्रों का चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक है । कथानक साम्प्रदायिक दंगे का है । अतः पात्रों द्वारा रक्तपात, हिंसा और आगजनी के कार्य करना स्वाभाविक ही है । डिप्टी कमिश्नर अंग्रेजी शासन की दृढ़ता के लिए ही हिन्दू-मुसलमानों को धर्म के नाम पर लड़वाता है :

'नहीं, मगर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनातनी बढ़ रही है । शायद फसाद होंगे ।'

'ये लोग आपस में लड़ेंगे ? लन्दन मे तो तुम कहते थे कि ये लोग तुम्हारे खिलाफ लड़ रहे हैं ।'

'हमारे खिलाफ भी लड़ रहे हैं और आपस में भी लड़ रहे हैं ।'

'कैसी बातें कर रहे हो ? क्या फिर तुम मजाक करने लगे ।

'धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं । देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं ।' रिचर्ड ने मुस्कराकर कहा ।

'बहुत चालाक न बनो रिचर्ड । मैं सब जानती हूँ । देश के नाम पर यह लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो । क्यों ठीक है न ?'

'हम नहीं लड़ाते । लीजा, ये लोग खुद लड़ते हैं ।'

'तुम इन्हें लड़ने से रोक तो सकते हो । आखिर हैं तो एक ही जाति के लोग ।'

22.6. देशकाल और वातावरण-चित्रण

देशकाल और वातावरण-चित्रण की दृष्टि से साहनी जी के उपन्यास देश के आजाद होने से पूर्व का सही राजनीतिक इतिहांस प्रस्तुत करते हैं । अंग्रेज अपने स्वार्थ के लिए धर्म के लिए नाम पर हिन्दू-मुसलमानों को उकसाकर साम्प्रदायिक दंगे करा रहे थे । देश की राष्ट्रीय संस्था काँग्रेस ब्रिटिश नौकरशाही से आजादी के लिए लोहा ले रही थी । अंग्रेजों ने अपनी 'फूट डालो और राज करो' करो नीति से हिन्दू-मुसलमानों में साम्प्रदायिक दंगे कराना प्रारंभ कर दिया था । अंग्रेजों की प्रेरणा से ही मुसलमानों के हितों की रक्षा के नाम पर मुस्लिम लीग की स्थापना हुई । इस संस्था ने काँग्रेस को हिन्दुओं की संस्था कहकर पुकारा । जो असाम्प्रदायिक राष्ट्रीय मुसलमान काँग्रेस में शामिल थे, कट्टर मुस्लिम लीग उनको हिन्दुओं का कुत्ता कहकर पुकारते थे । इस साम्प्रदायिक विषवमन के परिणामस्वरूप जो भीषण रक्तपात हुए, दंगे हुए और असंख्य जाने गईं, उन सबका आलोच्य उपन्यास में यथार्थ दृश्य उपस्थित हुआ । इस प्रकार आलोच्य उपन्यास तत्कालीन देश काल यथार्थ बिम्ब प्रस्तुत करता है और इसे औपन्यासिक इतिहास कहा जा सकता है ।

कथानक के प्रारंभ में मुरादअली की सहायता से नत्थू द्वारा सुअर कटवाया जाता है और इसे मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक

दिया जाता है । मुसलमान एक गाय काटकर धर्मशाला के बाहर डाल देते हैं । डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड इस प्रकार सारे शहर को साम्प्रदायिक दंगे की आग में झोंक देता है ।

सारे शहर में भीषण दंगे का तूफान उमड़ पड़ता है । अग्निकांड में बाजार और मकान स्वाहा हो जाते हैं । सारा शहर वीरान-सा हो जाता है । रक्तपात से मानवता चीत्कार उठती है । हिन्दू मुसलमानों के मुहल्ले में रेखा सी खिंच जाती है । मुस्लिम-बहुल मुहल्ले में हिन्दू और हिन्दू-बहुल मुहल्ले में मुसलमान जाने का साहस नहीं कर पाते ।

भीषण साम्प्रदायिक दंगे कस्बे और गांव में भी फैल जाते हैं । वहाँ भी भीषण नर-संहार होता है और संपत्ति का विनाश होता है । स्त्रियाँ कुएँ में गिरकर अपने सम्मान की रक्षा करती हैं । इतने भीषण साम्प्रदायिक दंगे को रोकने के लिए रिचर्ड ने कोई प्रयास नहीं किया । परंतु रक्तपात एवं विनाश-लीला के पश्चात् शांति स्थापित होती है । पुलिस की चौकियाँ बिठाई जाती हैं । अमन-कमेटियाँ कायम होती हैं । मुस्लिम लीग पाकिस्तान का नारा लगाती है ।

भीषण दंगे के बाद का भी यथार्थ चित्रण आलोच्य उपन्यास में हुआ है । हिन्दू-बहुल मुहल्ले से मुसलमान और मुसलमान बहुल मुहल्ले से हिन्दू अपनी जमीन-जायदाद और मकान छोड़कर भागने लगे । अवसरवादी उनके मकान कौड़ियों के मोल लेने लगे । निम्नलिखित उदाहरणों में स्थिति का यथार्थ चित्रण है :

"अमन तो तुम्हारे साहब ने करवा दिया । फिसाद कराने के बाद अब अमन करवा रहा है ।"

"फिसाद करवानेवाला भी अंग्रेजी, फिसाद रोकनेवाला भी अंग्रेज, भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज....." पर जब से फिसाद शुरू हुए थे बख्शीजी के दिमाग में धूल-सी उड़ने लगी थी, बस केवल इतना-भर ही बार-बार कहते रहे 'अंग्रेज फिर

बाजी ले गया, अंग्रेज फिर बाजी ले गया ।' पर शफरू से आखिर तक स्थिति उनके काबू में नहीं आयी ।''

इस प्रकार आलोच्य उपन्यास में तत्कालीन देशनकाल और वातवरण का यथार्थ चित्रण हुआ है ।

22.7. भाषा-शैली

साहनी जी के उपन्यास भारत के उन साम्प्रदायिक दंगों से संबंधित हैं जो अंग्रेजों के द्वारा कराये गये । ये भीषण साम्प्रदायिक दंगे शहर से लेकर, कस्बों और ग्रामों तक पहुँच गये । अतः कथानक में अंग्रेज डिप्टी-कमिश्नर, उसकी पत्नी लीजा, काँग्रेस एवं लीगी, हिन्दू, मुसलमान, सिख-ईसाई, शहरी, ग्रामीण, स्त्री-पुरुष आदि सभी वर्ग के पात्र सम्मिलित हैं । यही कारण है कि आलोच्य उपन्यास की भाषा में विविधता है । परंतु वातावरण, कथावस्तु एवं उद्देश्य की दृष्टि से भाषा का प्रवाह इतनी अबाध गति से चलता है कि भाषा में एकरसता आ जाती है । अवसर और परिस्थिति के अनुकूल पात्र भाषा प्रयोग करते हैं । उर्दू, अंग्रेजी, देहातों में बोले जाने वाली पंजाबी तथा मुहावरों का प्रयोग भाषा को सहजता एवं प्रवाह प्रदान करता है । इतने पर भी भाषा की दृष्टि से विशुद्ध-हिन्दी की रक्षा का प्रयास सराहनीय है । भाषा की दृष्टि से निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है :

पंजाबी : 'तैनूँ गाफला जाग न आयी चिड़ियाँ बोल रहियाँ ।'

उर्दू : 'अल्लाह सलामत रखे ।'

हास्य का पुट : 'तुमसे तो मुर्गा ही अच्छा है । कश्मीरी, कैसे देखा, जोर से बाँग लगाता है ।' शेरखान बोला ।

'क्यों, कश्मीरी किसी से कम है ! कश्मीरी काँग्रेस का कुक्कड़ ।' शाकर ने जोड़ा ।

'तू भी सिर पर लाल कलंगी लगा ले, कश्मीरी ! इसे लाल टोपी ले दो बख्शी जी, फिर बिल्कुल कुक्कड़ नजर आयेगा ।'

'क्यों, कलंगी के बगैर यह कुक्कड़ नजर नहीं आता ? यह मादा कुक्कड़ है, कुक्कड़ी । कशमीरी कुक्कड़ी ।'

अन्यत्र भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है । वह औपन्यासिक रस को प्रस्तुत करने में सक्षम है ।

22.8. शैली

आलोच्य उपन्यास में साम्प्रदायिक घटनावली का जमघट है । घटनाओं के वर्णन में वर्णात्मक शैली की प्रधानता है । यह शैली चित्र-विधायिनी है । यह घटनाओं के वर्णन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर देती है :

"तभी कुएँ की ओर से किसी के भागते हुए कदमों की आवाज आयी । तीनों ने घूमकर देखा, एक गाय भागती आ रही थी । उसके पीछे-पीछे एक आदमी सिर पर मुँडासा बाँधे और हाथ में डंडा लिये गाय के पीछे-पीछे भागता हुआ, उसे हाँके जा रहा था । उसकी छाती खुली थी । गले में ताबीज झूल रहा था, चिकनी खाल वाली बादामी रंग की गाय थी, मोटी-मोटी चरित-सी आँखें । डर के कारण उसकी पूँछ उठी हुई थी । लगता जैसे रास्ता भटक गई है । तीनों ठिठक गये । मँडासे वाले आदमी ने मुँह ढक लिया था ।

22.8.1. नाटकीय शैली

स्थान-स्थान पर कथोपकथनों के रूप में नाटकीय शैली का प्रयोग हुआ है । इस शैली से कथानक के प्रवाह में सहायता मिली है और पात्रों के चरित्र भी प्रकाशित हुए हैं ।

22.8.2. व्यंग्यात्मक शैली

आलोच्य उपन्यास में कई स्थलों पर व्यंग्यात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है । डिप्टी कमिश्नर के चले जाने पर बख्शी जी व्यंग्यात्मक स्वर में कहते हैं :

'फिसा करने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकनेवाला की अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अंग्रेज ... "

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भाषा-शैली की दृष्टि से साहनी जी के उपन्यास बहुत सफल बन पड़े हैं ।

22.9. बोध प्रश्न

1. उपन्यास तत्वों के बारे में एक लेख लिखिए ।
2. भीष्म साहनी की जीवनवृत्त के बारे में संक्षेप में लिखिए ।

NOTES

NOTES

इकाई तेईस : 'तमस्' का कथासार

इकाई की रूपरेखा

23.0. उद्देश्य

23.1. प्रस्तावना

23.2. अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर द्वारा साम्प्रदायिक दंगा कराने का षडयन्त्र

23.3. साम्प्रदायिक दंगे का भीषण रूप

23.4. विशेषताएँ

23.5. बोध प्रश्न

23.0. उद्देश्य

पिछले इकाई में आप बहु चर्चित राजनीतिक उपन्यास 'तमस्' और भीष्म साहनी जी के बारे में अध्ययन किया और सविस्तार रूप से जानकारी भी प्राप्त कर लीं ।

23.1. प्रस्तावना

इस इकाई में आप तमस का कथासार अध्ययन करेंगे । साथ में अंग्रेजों का षड्यंत्र आदि के बारे में जानेंगे ।

23.2. अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर द्वारा साम्प्रदायिक दंगा कराने का षड्यन्त्र

डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड अपने एक पिट्ठू कमेटी केकर्मचारी मुरादअली को मिला लेता है । मुरादअली नत्थू को पाँच रुपये पेशगी देकर सुअर मारने का काम सौंपता है । नत्थू एक तंग कोठरी में रातभर सुअर से जूझता हुआ अंत में सुअर मारने में सफल होता है । यह सुअर किसी के द्वारा एक मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा दिया जाता है । इस घटना के द्वारा साम्प्रदायिक दंगे की नींव पड़ जाती है । दूसरी ओर काँग्रेस-पार्टी प्रतिदिन राष्ट्रीय जागरण के लिए प्रभात-फेरी का आयोजन कर रही थी । बख्शी, मेहता, रामदास, अजीतसिंह, कश्मीरीलाल, शंकरलाल आदि सभी प्रभात फेरियों में भाग लेते हैं । इनका नेतृत्व जनरैल करता है ।

नत्थू ने सुअर को मार तो दिया और वह उठाकर भी ले जाया गया, परंतु वह सदैव इस भय से आतंकित बना रहता कि कहीं उसका कार्य प्रकट न हो जाय । मुसलमान काँग्रेस को हिन्दुओं की जमात कहने लगे थे । उन्होंने मुसलमानों के हित के लि मुस्लिम लोग की स्थापना पर ली थी । जो मुसलमान काँग्रेस में शामिल थे, उनको मुस्लिम लीगी हिन्दुओं का कुत्ता कहकर पुकारते थे ।

मस्जिद की सीढ़ियों पर सुअर काटकर डाले जाने का ल्ला मच जाता है । काँग्रेस की प्रभातफेरी का जुलूस उधर जाता हुआ रुक जाता है । मुसलमानों के द्वारा एक गाय काटी जाती है । इस प्रकार हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे की आग शहर में सुलगने लगती है । डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड और उसकी पत्नी लीजा के वार्तालाप में सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दू-मुसलमानों को अंग्रेज ही लड़ाते हैं ।

''ये लोग आपस में लडेंगे लन्दन में तुम कहते थे कि वो लोग तुम्हारे खिलाफ लड़ रहे हैं ।''

'धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं और दंगे के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं ।''

भीषण साम्प्रदायिक दंगा होने की संभावना से दोनों तरफ से तैयारी शुरु हो जाती है । शस्त्र इकट्ठे किए जाने लगते हैं । शिवाले के घड़ियाल की जाँच कराई लाने लगती है । मस्जिद में लाठियाँ, भाले और तरह-तरह के असला इकट्ठा किया जाने लगता है । देवव्रत के अखाड़े का संचालन जोरों से होने लगता है । दानवीर प्रधान कर पुत्र रणवीर उसमें दीक्षित हो जाता है । दंगे के समय गर्म तेल फेंकने के लिए तेल और कढ़ाही का भी प्रबंध कर लिया जाता है ।

हिन्दू-मुलसमानों का एक शिष्ट-मंडल डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड के घर पर मिलता है । रिचर्ड ने ही सुअर को कटवाकर केलों वाली मस्जिद की सीढ़ियों पर फिकवाकर साम्प्रदायिक दंगे की नींव डाली थी । अतः वह दंगे को रोकने में कोई सक्रिय योग नहीं देता । अपितु मिलने गये शिष्ट-मंडल को सलाह देता है :

''मुस्लिम लीग और काँग्रेस, दोनों के लीडर यहाँ पर मौजूद हैं, आप सरदार जी को साथ ले लीजिए और सब मिलकर अपनी कमेटी बनाइए और काम शुरु कर दीलिए । सरकार आपकी सब तरह से मदद करेगी ।''

इसके साथ रिचर्ड डेलीगेशन पर व्यंग्य करता हुआ कहता है :

"वास्तव में आपका मेरे पास शिकायत लेकर आना ही गलत था । आपको तो पण्डित नेहरू या डिफेंस मिनिस्टर सरदार बलदेवसिंह के पास जाना चाहिए था । सरकार की बागडोर तो उनके हाथ में है ।

23.3. साम्प्रदायिक दंगे का भीषण रूप

भीषण साम्प्रदायिक दंगा प्रारंभ हो जाता है । आगे कथानक का सारा विकास अब दंगों और मारकाट में ही होता है । सूचना आती है कि पुल के पार एक हिन्दू कत्ल कर दिया गया है । सभी बाजार बंद हो गये हैं । हिन्दू-मुसलमान परस्पर एक दूसरे के दुश्मन हो जाते हैं । मुसलमानी मुहल्ले की ओर हिन्दू और हिन्दू मुहल्ले की ओर मुसलमान का जाने का साहस नहीं होता । जन-प्रतिनिधि अमन के प्रयास में लग जाते हैं । ऐलान होता है ।

"आम शाम को छः बजे गंजमण्डी में जिला काँग्रेस कमेटी की तरफ से एक आम पब्लिक जलसा होगा, जिसमें हिन्दुस्तान की आजादी के जद्दोजहद में अंग्रेजी सरकार की फूट की नीति का पर्दाफाश किया जाएगा और सारे शहर के अवाम से अपील की जायगी कि अमन को बरकरार रखें । भारी तादाद में शामिल होकर जससे की रौनक को बढ़ायें ।"

परंतु शहर में तनाव बढ़ता जाता है । दिन-प्रतिदिन स्थिति बिगड़ती जाती है । जिस मस्जिद के सामने सुअर काटकर डाला गया था, उसके बाहर मुसलमानों की ओर से जिस धर्मशाला के सामने गाय काटकर डाली गई थी, हिन्दुओं की भारी भीड़ इकट्ठी हो जाती हे । रात्रि में अग्नि-काण्ड प्रारंभ हो जाता है । 'अल्ला-हो अकबर' और 'हर'हर'महादेव' के नारों से सारा वातावरण गूँज उठता है । यह स्वर-लहरी रिचर्ड के बंगले की दीवारों से भी टकरा रही थी । वह अपने षड्यंत्र की सफलता पर

प्रसन्न हो रहा था । लाला लक्ष्मीनारायण एक समृद्ध व्यापारी हैं । वे मुसलमानों की बस्ती के बीच में रहते हैं । अनेक मुसलमान व्यापारियों के साथ उनके घनिष्ठ संबंध हैं । वे बहुत चिंतित हैं । उनका पुत्र रणवीर बाहर है और घर में जवान लड़की है, उधर मण्डी जलकर स्वाहा हो रही है । हिन्दुओं का लाखों का नुकसान हो रहा है । वे अपने नौकर ननकू को अपने मित्र शाहनवाज के पास रात्रि में ही इस संदेश के साथ भेजते है कि वह उनको निकाल कर सुरक्षित जगह पहुँचा दें । शाहनवाज उनका मित्र है और असर रखने वाला मुसलमान है । तभी कहीं से, मगर वह बार-बार मकान की छतों से दोहराया जाने लगा । मकान की छतों पर चढ़े हुए आग का तमाशा देखने वाले लोग भी उसे दोहराने लगे । एक शोर-सा मचने लगा । दूर शिवाले की ओर से हिन्दु नारों की भी आवाज आजी लेकिन बहुत कम और बहुत फीकी सी आवाज आती । आंस-पास उसे कहीं भी दोहराया नहीं जा रहा था ।

अग्नि-काण्ड और दंगे ने शहर का कितना विनाश किया, इसका चित्र उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है :

''दिन के उजाले में शहर अधमरा-सा पड़ा था, मानों उसे साँप सूँध गया हो । मण्डी अभी भी जल रही थी, म्युनिसिपैलिटी के फायर ब्रिगेड ने उसके साथ जूझना कब का छोड़ दिया था । उसमें से उठने वाले धुँए से आसमान में कालिमा पुत रही थी, जबकि रात के वक्त आसमान लाल हो रहा था । सत्रह दुकान जलकर राख हो चुकी थीं ।

X X X

''मुहल्लों के बीच लीकें खिंच गई, हिन्दुओं के मुहल्ले में मुसलमानों की जाने की हिम्मत नहीं थी और मुसलमानों के मुहल्ले में हिन्दु सिख अब नहीं आ-जा सकते थे ।''

X X X

''घरों के दरवाले बंद थे, शहर का कारोबार, स्कूल, कॉलिज, दफ्तर सभी ठप्प हो गये थे ।''

कथानक के विकास के साथ में हिन्दू और मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे की भयावहता का प्रसार होता जाता है । हिन्दू-मुसलमान दोनों की जानें जा रही थीं, इस बीच में जनरैल ही एक ऐसा है, जो प्राणों की परवाह किये बिना घोषण करता फिरता है :

"साहिवान मैं आपसे कहता हूँ कि हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं । शहर में फिसाद हो रहा है । आगजनी हो रही है और उसे कोई रोकता नहीं । डिप्टी कमिश्नर अपनी मेम को बाहों में लेकर बैठा है और मैं कहता हूँ कि हमारा दुश्मन अंग्रेज है । गाँधी जी कहते हैं कि वही हमें लड़ाता है और हम भाई-भाई हैं । हमें अंग्रेजों की बातों में नहीं आना चाहिए ।

छुरेबाजी, आगजनी और हत्याओं की घटनाएँ बढ़ती जाती है ।

इस प्रकार उपन्यास के प्रथम खण्ड में साम्प्रदायिक दंगे का प्रसार शहर में अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है । साम्प्रदायिक दंगे का प्रयास गाँवों में भी हो जाता है । द्वितीय खण्ड में ग्रामों में फैले हुए भीषण साम्प्रदायिक दंगे का चित्रण उपन्यासकार ने किया हे । उपन्यासकार ने यहाँ ढोक इलाहीबख्श और खानपुर नाम के दो गाँवों के भीषण साम्प्रदायिक दंगे का चित्रण किया है । ढोक इलाहीबख्श में केवल हरनामसिंह ही हिन्दू था । उसकी दुकान को भी, दंगाई चारों ओर से गाँव को आकर घेर लेते हैं । हरनामसिंह अपनी पत्नी बन्नो को लेकर दुकान में ताला लगाकर गाँव से निकल पड़ता है । पुत्र इकबाल सिंह और पुत्री जसवीर की चिंता उनको सताती रहती है । इधर गुरुद्वारा में बलवाइयों से रक्षा की तैयारी हो रही थी । हरनामसिंह बन्नो सहित एक गाँव में पहुँचकर कुण्डी खटखटाते हैं । यहाँ गृह-स्वामिनी राजो उनको शरण देती हे । उसके पति एवं पुत्र रात्रि में दंगाइयों के साथ जाते हैं । इसकी उसे चिंता है । वह दोनों हरनामसिंह का वध करने को तैयार हो जाते हैं । परंतु हरनामसिंह उनका परिचित था । अतः

उसके तथा उसकी पत्नी के प्राणों की रक्षा हो जाती है । राज़ो दोनों को गाँव से सकुशल बाहर कर देती है । इधर गाँव में सब कुछ नष्ट हो चुका है । उसके पुत्र इकबालसिंह को मुसलमान बना लिया गया है । बहुत सी सिख औरतों ने कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर ली है । जसवीर भी कुएँ में कूद पड़ी थी, गुरुद्वारे में आग लगाने की तैयारी बलवाई कर रहे थे ।

इस प्रकार शहर से लेकर गाँव और कस्बे तक साम्प्रदायिक ज्वाला में धू-धू करके जलने लगते हैं । चारों ओर विनाशलीला का तांडव नृत्य दिखाई देने लगता है । एक हवाई जहाज उड़कर शांति स्थापना का संदेश देता है । बलवाई गुरुद्वारे में आग लगाना छोड़कर भाग जाते हैं ।

"जिस-जिस गाँव में हवाई जहाज उड़ता गया, वहीं पर ढोल बजने बंद हो गये, नारे लगाये जाने बंद हो गये । आगजनी और लूटपाट बन्द हो गई ।"

सारा माहौल ही बदल गया, बाजार खुल गये, मुर्दों को जलाने का प्रबंध होने लगा, अमन सभी हुई । सभी ने रिचर्ड की शांति स्थापना की प्रशंसा की । अमन सभा से डिप्टी-कमिश्नर के चले जाने के बाद बख्शी जी ने कहा :

"फिसाद कराने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज ..... ।"

भीषण साम्प्रदायिक दंगों के पश्चात् रिलीफ कमेटी की स्थापना होती है । कितनी जन-धन की हानि हुई इसके आँकड़े इकट्ठे किये जाते हैं । बहुत सी हिन्दू युवतियाँ मुसलमान बना ली जाती हैं । प्रकाशों को अल्लाहबख्श ने अपने घर में बिटा लिया है । यदि ये युवतियाँ अपने घरों में आना भी चाहें तो भी इनको स्थान नहीं, क्योंकि ये समाज की दृष्टि में धर्म-भ्रष्ट हो चुकी हैं ।

अमन कमेटी की स्थापना के लिए हॉल में कमेटी होती है । सभी वर्गों के प्रतिनिधि इकट्ठे होते हैं । शहर में फिसाद होने के पश्चात् हिन्दुओं के मुहल्ले से मुसलमानों के निकलने तथा मुसलमानों के मुहल्ले से हिन्दुओं के निकलने की बाढ़ सी आ गई थी । निकलकर जाने वाले लोगों कमे मकान कौड़ियों के मूल्य में बिक रहे थे ।

अमन कमेटी की स्थापना में अच्छी खासी साम्प्रदायिक बहस छिड़ जाती है । लीगी मुसलमान प्रतिनिधि नारा लगाते हैं कि काँग्रेस हिन्दुओं की जमात है । हम पाकिस्तान लेकर रहेंगे । हिन्दू, मुसलमानों, सिक्खों के प्रतिनिधियों की संख्या पर बड़ी खींचातानी होती है । अन्ततः अमन कमेटी की स्थापनाप हो जाती है । जो गाड़ी अमन-स्थापना के लिए निकली उसमें मुरादअली भी बैठा हुआ शांति के नारे लगा रहा है । यह यही मुरादअली है, जिसने नत्थू से सुअर को कटवाकर सारे शहर को भीषण साम्प्रदायिक दंगों की आग में झोंमक दिया था ।

कथानक का समापन रिचर्ड और लीग के वार्तालाप से होता है । रिचर्ड लीला से कहता है कि उसका यहाँ से शीघ्र ही ट्रान्सफर कर दिया जाएगा । इसका कारण वह लीला को यह बताता है कि - "जिस जगर दंगा फसाद हो जाये वहाँ से सरकार आमतौर पर अफसरों को बदल देती है ।"

23.4. विशेषताएँ

आलोच्य उपन्यास का कथानक अंग्रेजों द्वारा कराये गये भीषण साम्प्रदायिक दंगों पर आधारित है । उपन्यासकार ने इस सामान्य सत्य को स्पष्ट किया है कि अंग्रेज हिन्दू-मुसलमानों में साम्प्रदायिक दंगे कराकर किस प्रकार अपना उल्लू सीधा करते रहे । सारा कथानक साम्प्रदायिक दंगों के वातावरण से भरा हुआ है । अंग्रेजों द्वारा सुअर कटवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवाने से साम्प्रदायिक तनाव प्रारंभ हो जाता है । गाय को काटे जाने से

यह तनाव उग्र रूप धारण कर लेता है । इसी साम्प्रदायिक तनाव के प्रारंभ होने में कथानक प्रारंभ होता है । साम्प्रदायिक भीषण दंगा शहर से लेकर कस्बे और गाँवों तक फैल जाता है । दंगों की घटनावली में ही कथानक का विकास होता है । कथानक की समाप्ति दंगों में भीषण बरबादी और अमन कमेटी की स्थापना में होती है । कथानक में काँग्रेस और मुस्लिम लीग को हलचल व्यापक रूप से आई ळे । संबंधित पात्रों के चरित्र एवं कार्यों को विश्लेषण मनोवैज्ञानिक रूप से हुआ है । कथानक में औपन्यासिक गटन का निखरा हुआ रूप नहीं मिलता । सारा उपन्यास साम्प्रदायिक दंगों से संबंधित घटनावली का लेखा-जोखा भर बन गया है । तत्कालीन देशकाल और वातावरण प्रस्तुत करने की दृष्टि से आलोच्य उपन्यास बहुत सफल बन पड़ है ।

23.5. बोध प्रश्न

1. 'तमस्' उपन्यास का सार बताइए ।

NOTES

इकाई चौबीस : उपन्यास की तत्वों की आधार पर 'तमस्'

इकाई की रूपरेखा

24.0. उद्देश्य

24.1. प्रस्तावना

24.2. कथावस्तु और वस्तु-संविधान

24.3. कथानक के मध्य भाग का विकास

24.4. कस्बों और ग्रामों में साम्प्रदायिक दंगे का प्रसार

24.5. पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण

24.5.1. शहरी पात्र

24.5.2. ग्रामीण पात्र

24.5.2.1. डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड का पक्ष

24.5.2.2. काँग्रेस-पक्ष के पात्र

24.5.2.3. लीगी पात्र

24.6. कथोपकथन

24.7. देशकाल और वातावरण चित्रण

24.8. भाषा-शैली

24.8.1. शैली

24.8.2. नाटकीय शैली

24.8.3. व्यंग्यात्मक शैली

24.9. उद्देश्य

24.10. बोध प्रश्न

24.0. उद्देश्य

पिछले इकाई में आपने 'तमस' का कथासार के बारे में अध्ययन किया और अंग्रेज कमिश्नर का षड्यंत्र भी जान लिया ।

24.1. प्रस्तावना

अब इस इकाई में कथा का विकास तथा चरित्र-चित्रण आदि के बारे में अध्ययन करेंगे ।

24.2. कथावस्तु और वस्तु-संविधान

'तमस' उपन्यास की कथावस्तु अंग्रेज डिप्टी-कमिश्नर रिचर्ड द्वारा कराये गये हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे और उनके परिणाम स्वरूप विनाश-लीला पर आधारित है । अंग्रेज शासकों ने फूट डालो और शासन करो की नीति को अपनाकर 200 वर्ष तक भारत पर शासन किया और सन् 1947 में देश के स्वतंत्र होने पर भी वे इस साम्प्रदायिक विष को छोड़ गये । जिसके परिणाम स्वरूप देश में भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए और अपार धन-जन की हानि हुई । सारी कथावस्तु का केन्द्र यही मुख्य भावना है ।

कथानक का प्रारंभ रात्रि के समय एक बन्द कोठरी में नत्थू द्वारा सुअर मारने के प्रयास से होता है । नत्थू रात-भर सुअर से जूझता रहता है और सवेरा होने से पहले सुअर को मार लेता है । इस सुअर को मारने का काम रिचर्ड ने कमेटी के कर्मचारी मुरादअली की मारुत कराया था । मुरादअली ने इस काम के लिए पहले ही पेशगी के रूप में नत्थू को पाँच रुपये दे दिये थे । इस प्रकार कथानक के प्रवेश में साम्प्रदायिक दंगे का बीजारोपण हो जाता है । सुअर को मारकर एक मस्जिद की सीढ़ियों पर डाल दिया जाता है । इधर काँग्रेस-कमेटी के मंत्री बख्शी मेहता, रामदास, कश्मीरीलाल, शंकरलाल आदि सभी भाग लेते हैं । जनरल पक्का काँग्रेसी है । वही प्रभातफेरी का झंडा उठाकर

चलता है और समय-असमय भाषण भी दे डालता है । काँग्रेसी मुहल्ले में सफाई का भी अभियान करते हैं, इसकी प्रशंसा मुसलमान तक करते हैं ।

इस पृष्ठभूमि के पश्चात् कथानक साम्प्रदायिक दंगे की ओर मोड़ लेते हैं । मस्जिद पर कटे सुअर के पड़े होने का हल्ला सारे मुसलमानों में फैल जाता है । इसकी प्रतिक्रिया तत्काल होती है । मुसलमानों की तरफ से एक गाय काटकर धर्मशाला के बाहर डाल दी जाती है । सारे शहर में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । हिन्दू-मुसलमान अपनी रक्षा एवं आक्रमण-प्रत्याक्रमण की तैयारी में लग जाते हैं ।

साम्प्रदायिक दंगे की सूचना रिचर्ड तक पहुंचती है । उसे सब कुछ पहले से ही मालूम था । उसी की तो यह योजना थी । उसकी पत्नी लीजा उससे कहती है :

"बहुत चालाक नहीं बनो रिचर्ड ! मैं सब जानती हूँ । देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो । क्यों, ठीक है न ?"

हिन्दू और मुस्लिम नेता रिचर्ड की कोठी पर पहुंचते हैं और शांति-स्थापना के लिए करफ्यू लगाने आदि का सुझाव देते हैं । परंतु रिचर्ड शांति-स्थापना के लिए कोई कदम उठाना नहीं चाहता । वह बड़ी मक्कारी से प्रतिनिधियों को जवाब देता है :

"ताकत तो इस समय पंडित नेहरू के हाथ में है आप लोग ब्रिटिश सरकार के खिलाफ तो, दोष ब्रिटिश सरकार का ओर जो आपस में लड़े, तो भी दोष ब्रिटिश सरकार का । लेकिन कहिये, हमें इस मामले को मिल-जुलकर सुलझाना चाहिए । वास्तव में आपका मेरे पास शिकायत लेकर आना ही गलत था । आपको तो पंडित नेहरू या डिफेंस मिनिस्टर सरदार बलदेवसिंह के पास जाना चाहिए था । सरकार की बागडोर तो उनके हाथ में है ।"

इतने में ही शहर में दंगा हो जाने की खबरें आने लगती

हैं । हिन्दू और मुसलमान दोनों के प्रतिनिधि मोटर में बैठकर शांति का ऐलान करने निकलते हैं, परंतु परिणाम कु नहीं निकलता ।

शहर में भीषण साम्प्रदायिक दंगा हो जाता है । नत्थू को सब कुछ पता चल जाता है । उसको अपने काम पर ग्लानि होती है ; उसे यह भय लगा रहता है कि कहीं उसके इस जघन्य कार्य का रहस्य खुल न जाय ।

24.3. कथानक के मध्य भाग का विकास

कथानक के मध्य भाग का विकास शहर में भीषण आगजनी, मारकाट और दंगों में होता है । पूरा बाजार अग्नि में जल जाता है । सरकार की तरफ से दंगा रकने का कोई प्रयास नहीं होता । हिन्दू-मुसलमानों के मुहल्लों के बीच में एक कृत्रिम विभाजन रेखा सी खिंच जाती है । हिन्दू-मुसलमानों के मुहल्ले में और मुसलमान हिन्दुओं के मुहल्ले में जाने से डरता है । सारा शहर वीरान हो जाता है लाशें सड़ने लगती है । आसमान में गृद्ध और चीलें मँडराने लगती हैं । कुछ प्रभावशाली मुसलमान अपने हिन्दू मित्रों को अवश्य सुरक्षित स्थान में सुनाई पहुंचा देते है । 'अल्ला-हो-अबकर' और 'हर-हर-महादेव' की गुंजार सारे शहर में सुनाई पड़ती है । इस प्रकार उपन्यास के प्रथम भाग में जो तेरहवें कथाश तक चलता है, शहर में हुए भीषण साम्प्रदायिक दंगों की घटनावली में ही कथानक का विकास होता है ।

24.4. कस्बों और ग्रामों में साम्प्रदायिक दंगे का प्रसार

शहर के साम्प्रदायिक दंगे की हवा ग्रामों और कस्बों में भी पहुंच जाती है । कस्बे और गाँव भी साम्प्रदायिक दंगे की ज्वाला में जंल उठते हैं । लूटमार, आगजनी, मारकाट आदि का दौर चलता है । यहाँ कथानक के साम्प्रदायिक दंगे को क्षेत्र ग्राम ढोक इलाहीवख्श है । कुछ बस्ती सिखों की हैं । अधिकतर आबादी मुसलमानों की है । यहाँ हरिनामसिंह परचूनी की दूकान करता

है । बलवाई खानपुर की तरफ से आकर गाँव को घेर लेते हैं । सारा गाँव 'अल्लाह-हो-अबकर' के नारे से गूँज उठता है । गुरुद्वारे में रक्षा का असफल प्रयास होता है । हरनामसिंह अपनी पत्नी-बन्तो-सहित प्राणों की रक्षा के लिये निकल पड़ा है । वे ढोक मुरीदपुर पहुंचते हैं और एक मुसलमान परिवार में शरण लेते हैं । गृहस्वामिनी राजो की सहृदयता से उनके प्राणों की रक्षा होती है । गाँव लौटने पर सब कुछ उजड़ा मिलता है । उसके पुत्र इकबाल सिंह को मुसलमान बना लिया जाता है और लड़की को मुसलमान पकड़ ले गये हैं । बहुत-सी सिख स्त्रियाँ कुएँ में कूदकर मृत्यु को प्राप्त हो चुकी हैं । गुरुद्वारे में आग लगाने की कार्यवाई चल रही है ।

इतना रक्तपात, लूट-मार और विनाश कराकर सरकार को शांति-व्यवस्था की सूझती है । शहर और ग्रामों में शांति स्थापित हो जाती है । रिलीफ कमेटियाँ बनती हैं । सदस्यों के चुनाव पर झगड़ा होता है । मुस्लिम लीग और काँग्रेस का भेद पैदा होता है । इसी के साथ कथानक समाप्त होता है ।

आलोच्य उपन्यास की मुख्य कथा अंग्रेजों द्वारा कराये गये हिन्दू-मुस्लिम दंगे की है । इसमें जो मारकाट होती है और विनाश होता है, उसकी घटनावाली से ही सारा कथानक भरा हुआ है । उपन्यासकार ने शहर के दंगे को देहात और कस्बों तक पहुंचकर सारे कथानक को एक सूत्र में जोड़ दिया है । इस प्रकार वस्तु-सिवधान की दृष्टि से आलोच्य उपन्यास सफल ही कहा जायेगा ।

24.5. पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण

आलोच्य उपन्यास अंग्रेजी शासन द्वारा बनाये गये साम्प्रदायिक दंगों का व्यापक पट प्रस्तुत करता है । अतः पात्रों में सभी वर्ग के पांत्रों को प्रतिनिधित्व मिला है । दंगे का प्रसार शहर

से लेकर ग्रामों तक हो गया, अतः पात्रों को सामान्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

24.5.1. शहरी पात्र

इनमें दुकानदार, सेठ, साहूकार तथा आम जनता के सभी वर्ग के पात्र हैं ।

24.5.2. ग्रामीण पात्र

साम्प्रदायिक दंगों का प्रसार जिन ग्रामों में दिखाया गया है, उनमें प्रायः मुसलमानों और सिखों की आबादी है । मुसलमान अपेक्षाकृत अधिक हैं । अन्य जातियों के भी जन हैं ।

साम्प्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि राजनीति है । ये दंगे अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड द्वारा कराये हुए हैं । इसमें मुस्लिम लीग और काँग्रेस के दो पक्ष स्पष्ट हो गये हैं । तीसरा झगड़ा कराने वाला पक्ष अंग्रेजों का है । राजनीतिक दृष्टि से आलोच्य उपन्यास के पात्रों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

24.5.2.1. डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड का पक्ष

इसने कमेटी के कर्मचारी मुरादअली जैसे लोगों को मिला रखा है । मुरादअली के द्वारा ही नत्थू से सुअर मरवाया जाता है । इसी सुअर को मस्जिद की सीढ़ियों पर डाले जाने से साम्प्रदायिक दंगे का कारण बनता है ।

24.5.2.2. काँग्रेस-पक्ष के पात्र

इसमें सभी काँग्रेसी नेता शामिल हैं, जो प्रभात फेरियाँ निकालते हैं । जरनैल काँग्रेस का सक्रिय कार्यकर्ता है । वही काँग्रेस का झंडा लेकर आगे चलता है । कुछ मुसलमान भी काँग्रेस

में सम्मिलित हैं । इनको लीगी हिन्दुओं का कुत्ता कहकर संबोधिन करते हैं ।

24.5.2.3. लीगी पात्र

मुसलमान मुस्लिम लीग में सम्मिलित हैं । उपर्युक्त पार्टियों का तनाव ही साम्प्रदायिक दंगे का कारण बनता है । कथानक के अंत में जो अमन कमेटी बनती है । उसमें आर्यसमाज, ईसाई-सिख आदि पात्र भी सम्मिलित किये जाते हैं । इस प्रकार आलोच्य उपन्यास में पात्रों की संख्या बहुत अधिक हो गई है । इसमें प्रत्येक वर्ग के पात्र मिलते हैं, जो अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुछ पात्र अपनी विशिष्ट मानवीय उदात्त भावनाओं को लेकर सामने आये हैं । राजो हरनामसिंह और उसकी पत्नी बन्ती की रक्षा ही नहीं करती अपितु उनको सुरक्षित रूप मे उनके गाँव ही भेज देती है ।

पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से आलोच्य उपन्यास सफल है । पात्रों का चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक है कथानक सम्प्रदायिक दंगे का है । अतः पात्रों द्वारा रक्तपात, हिंसा और आगजनी के कार्य करना स्वाभाविक ही है । डिप्टी कमिश्नर अंग्रेज शासन की दृढ़ता के लिए ही हिन्दू-मुसलमानों को धर्म के नाम पर लड़वाता है ।

24.6. कथोपकथन

कथोपकथन का नाटक में विशेष महत्व होता है । क्योंकि नाटककार को अपनी तरफ से कुछ भी कहने का अधिकार नहीं होता है । परंतु उपन्यास में भी कथोपकथनों का महत्व कम नहीं है । लेखक कथोपकथनों के द्वारा ही पात्रों के चरित्र को प्रकाशित करता है तथा बातचीत में ऐसी घटनाओं की सृष्टि कर देता है, जो कथानक के विकास में सहायक होती हैं ।

आलोच्य उपन्यास के कथोपकथन बड़े नाटकीय, पैने,

व्यंजक और पात्रों के चरित्र को प्रकाशित करने वाले हैं । वे वातावरण की सृष्टि करते हैं । लीजा और रिचर्ड का निम्नलिखित क़थोपकथन इस स्थिति को स्पष्ट कर देता है कि अंग्रेज अधिकारी धर्म के नाम पर किस प्रकार हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाते हैं -

रिचर्ड ने खोये-खोये मन से कहा - "सुनो लीजा, यहाँ पर शायद कोई गड़बड़ हो ।"

लीजा ने आँखें ऊपर उठाईं और रिचर्ड के चेहरे की ओर देखने लगी ।

'क्या गड़बड़ होगी ? फिर जंग होगी ?'

'नहीं, मगर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनातनी बढ़ रही है । शायद फसाद होंगे ।'

'ये लोग आपस में लड़ेंगे ? लन्दन में तो तुम कहते थे कि ये लोग तुम्हारे खिलाफ लड़ रहे हैं ।'

'हमारे खिलाफ भी लड़ रहे हैं और आपस में भी लड़ रहे हैं ।'

'कैसी बातें कर रहे हो ? क्या फिर तुम मजाक करने लगे ।'

'धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं । देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं ।' रिचर्ड ने मुस्कराकर कहा ।

'बहुत चालाक न बनो रिचर्ड । मैं सब जानती हूँ । देश के नाम पर यह लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो । क्यों ठीक है न ?'

'हम नहीं लड़ाते । लीजा, ये लोग खुद लड़ते हैं ।'

'तुम इन्हें लड़ने से रो तो सकते हो । आखिर हैं तो एक ही जाति के लोग ।'

आलोच्य उपन्यास के कथोपकथन बड़े नाटकीय, व्यंजक और सफल बन पड़े हैं । निम्नलिखित कथोपकथन में एक सफल कथोपकथन के समस्त गुण मिलते हैं । यहाँ साम्प्रदायिक दंगे में मारकाट और विनाश का यथार्थ चित्रण मिलता है :

'तुम बचकर कैसे आ गये ? '

'करीमखान के साथ हमारे अच्छे ताल्लुकात थे । शाम को जब ..... '

बाबू ने उँगली का इशारा करके उसे बोलने से बन्द कर दिया ।

'जारी नुकसान ?'

'नहीं जी ? मैं और मेरी घरवाली बचकर आ गये हैं । बेटा इकबालसिंह नूरपुर में था जी, उसका कुछ मालूम नहीं बेटी जसबीर कौर सैयदपुर में थी, वह कुएँ में डूब मरी है ।'

बाबू ने फिर उंगली का इशारा करके चुप करा दिया, 'सीधे कहो, जानी नुकसान ?'

'एक बेटी डूब मरी ।'

'मगर वह तुम्हारे गाँव में तो नहीं मरी ?'

'जी नहीं ।'

'ये आँकड़े अन्य गाँव के हैं, आप अपने गाँव की सुनाइए !'

'जानी नुकसान ?'

'दूकान जल गयी है । सारा सामान लूट लिया गया । एक ट्रंक था वह भी चोरी हो गया था, उसमें से दो सोने के कड़े .... । पर वह ट्रंक मैंने खुद ही एहसानअली को दे दिया था जी । राजो, उसकी घरवाली बड़ी नेकबख्स औरत है । उसने .... ।'

बाबू की उँगली फिर से खड़ी हो गयी थी और हरनामसिंह चुप हो गया था ।

'दुकान कितनी लागत की होगी ?'

'क्यों बन्तो ? दुकान कितनी लागत की रही होगी ?'

'कुल लागत बताइए सामान समेत जल्दी कीजिए, मुझे और भी बहुत काम है ।'

'यही सात-आठ हजार, पीछे जमीन थी कुछ ।'

'दस हजार लिख लूँ ?'

'जी, लिख लीजिए ।'

'कोई माल बरामद करना है ?'

'जी एक बन्दूक है, दोनाली बन्दूक है, यह अधिरी में जलालदीन सूबेदार के घर में रखी है ।

'तुम तो अधिरी के नहीं हो तुम तो ढोक इलाहीबख्श के हो ।'

''जी हम ढोल इलाहीबख्श से भाग गये थे । पहली रात तो हम नदी के किनारे-किनारे भागते रहे, दिन के वक्त हम एहसानअली के घर में रहे, रात को फिर चलते रहे । दूसरे दिन अधिरी में जलालुद्दीन ने हमें पनाह दी । वह बहुत भला आदमी हैं, जी, उसने हमें अलग से बर्तन दिये कि अपनी रसोई आप कर लो ।''

''बस छोड़िये, इस सूबेदार का नाम और पता दीजिए ।''

अतः कथोपकथन की दृष्टि से आलोच्य उपन्यास सफल है ।

24.7. देशकाल और वातावरण-चित्रण

देशकाल और वातावरण-चित्रण की दृष्टि से आलोच्य उपन्यास देश के आजाद होने से पूर्व का सही राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत करता है । अंग्रेज अपने स्वार्थ के लिए धर्म में नाम पर हिन्दू-मुसलमानों को उकसाकर साम्प्रदायिक दंगे करा रहे थे । देश की राष्ट्रीय संस्था काँग्रेस ब्रिटिश नौकरशाही से आजादी के लिए लोहा ले रही थी । अंग्रेजों ने अपनी 'फूट डालो और राज करो' की नीति से हिन्दू मुसलमानों में साम्प्रदायिक दंगे कराना प्रारंभ कर दिया था । अंग्रेजों की प्रेरणा से ही मुसलमानों के हितों की रक्षा के नाम पर मुस्लिम लीग की स्थापना हुई । इस संस्था ने काँग्रेस को हिन्दुओं की संस्था कहकर पुकारा । जो असाम्प्रदायिक राष्ट्रीय मुसलमान काँग्रेस में शामिल थे, कट्टर मुस्लिम लीगी उनको हिन्दुओं का कुत्ता कहकर पुकारते थे । इस साम्प्रदायिक विष-वमन के परिणाम स्वरूप जो भीषण रक्तपात हुए, दंगे हुए और असंख्य जाने गईं, उन सबका आलोच्य उपन्यास में यथार्थ दृश्य उपस्थित हुआ है । इस प्रकार आलोच्य उपन्यास तत्कालीन

देशकाल का यथार्थ बिम्ब प्रस्तुत करता है और इसे औपन्यासिक इतिहास कहा जा सकता है ।

कथानक के प्रारंभ में मुरादअली की सहायता से नत्थू द्वारा सुअर कटवाया जाता है और इसे मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक दिया जाता है । मुसलमान एक गाय काटकर धर्मशाला के बाहर डाल देते हैं । डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड इस प्रकार सारे शहर को साम्प्रदायिक दंगे की आग में झोंक देता है ।

सारे शहर में भीषण दंगे का तूफान उमड़ पड़ता है । अग्निकांड में बाजार और मकान स्वाहा हो जाते हैं । सारा शहर वीरान-सा हो जाता है । रक्तपात से मानवता चीत्कार कर उठती है । हिन्दू मुसलमानों के मुहल्ले में रेखा सी खिंच जाती है । मुस्लिम बहुल मुहल्ले में हिन्दू और हिन्दू-बहुल मुहल्ले में मुसलमान जाने का साहस नहीं कर पाते ।

भीषण साम्प्रदायिक दंगे कस्बे और गाँव में भी फैल जाते हैं । वहाँ भी भीषण नर-संहार होता है और सम्पत्ति का विनाश होता है । स्त्रियाँ कुएँ में गिरकर अपने सम्मान की रक्षा करती हैं । इतने भीषण साम्प्रदायिक दंगे को रोकने के लिए रिचर्ड ने कोई प्रयास नहीं किया । परंतु रक्तपात एवं विनाश-लीला के पश्चात् शांति स्थापित होती है । पुलिस की चौकियाँ बिठाई जाती हैं । अमन कमेटियाँ कायम होती हैं । मुस्लिम लीग पाकिस्तान का नारा लगाती है ।

भीषण दंगे के बाद का भी यथार्थ चित्रण आलोच्य उपन्यास में हुआ है । हिन्दू-बहुल मुहल्ले से मुसलमान और मुसलमान-बहुल मुहल्ले से हिन्दू अपनी जमीन जायदाद और मकान छोड़कर भागने लगे । अवसरवादी उनके मकान कौड़ियों के मोल लेने लगे । निम्नलिखित उदाहरणों में स्थित का यथार्थ चित्रण है -

''अमन तो तुम्हारे साहब ने करवा दिया । फिसाद करवाने के बाद अब.अमन करवा रहा है ।''

''फिसाद करवाने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज । पर जब ये फिसाद शुरू हुये थे बख्शीजी के दिमाग में धूल-सी उड़ने लगी थी, बस केवल इतना-भर ही बार-बार कहते रहे 'अंग्रेज फिर बाजी ले गया । अंग्रेज फिर बाजी गया ।' पर शुरू से आखिर तक स्थिति उनके काबू में नहीं आयी ।''

इस प्रकार आलोच्य उपन्यास में तत्कालीन देशकाल और वातावरण का यथार्थ चित्रण हुआ है ।

24.8. भाषा-शैली

आलोच्य उपन्यास भारत के उन साम्प्रदायिक दंगों से संबंधित है जो अंग्रेजों के द्वारा कराये गए । ये भीषण साम्प्रदायिक दंगे शहर से लेकर, कस्बों और ग्रामों तक पहुंच गये । अतः कथानक में अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर, उसकी पत्नी जीजा, कांग्रेस एवं लीगी, हिन्दू, मुसलमान, सिख-ईसाई, शहरी, ग्रामीण, स्त्री-पुरुष आदि सभी वर्ग के पात्र सम्मिलित हैं । यही कारण है कि आलोच्य उपन्यास की भाषा में विविधता है । परंतु वातावरण, कथावस्तु एवं उद्देश्य की दृष्टि से भाषा का प्रवाह इतनी अबाध गति से चलता है कि भाषा में एक रसता आ जाती है । अवसर और परिस्थिति के अनुकूल पात्र भाषा का प्रयोग करते हैं । उर्दू, अंग्रेजी, देहातों में बोले जानी वाली पंजाबी तथा मुहावरों का प्रयोग भाषा को सहजता एवं प्रवाह प्रदान करता है । इतने पर भी भाषा की दृष्टि से विशुद्ध-हिन्दी की रक्षा का प्रयास सराहनीय है । भाषा की दृष्टि से निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

पंजाबी - ''तैनूँ गाफला जलाग न आयी चिड़ियाँ बोल रहियाँ ।'
उर्दू - 'अल्लाह सलामत रखे ।'
हास्य का पद - 'तुमसे तो मुर्गा ही अच्छा है । कश्मीरी, देखा, कैसे ग़ैब से बाँग लगाता है ।' शेरखान बोला ।

'क्यों' कश्मीरी किसी से कम है ! कशमीरी कॉंग्रेस का कुक्कड़ ।' शंकर ने जोड़ा ।

'तू भी सिर पर लाल कलंगी लगाले, कश्मीरी ! इसे लाल टोपी ले दो बख्शी जी, फिर बिल्कुल कुक्कड़ नजर आयेगा ।'

'क्यों, कलंगी के बगैर यह कुक्कड़ नजर नहीं आता ? यह मादा कुक्कड़ है, कुक्कड़ी । कश्मीरी कुक्कड़ी ।'

अन्यत्र भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है । वह औपन्यासिक रस को प्रस्तुत करने में रक्षम है ।

24.8.1. शैली

आलोच्य उपन्यास में साम्प्रदायिक घटनावली का जमघट है । घटनाओं के वर्णन में वर्णात्मक शैली की प्रधानता है । यह शैली चित्र-विधायिनी है । घटनाओं के वर्णन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर देती है -

'तभी कुएँ की ओर से किसी के भागते हुए कदमों की आवाज आयी । तीनों ने घूमकर देखा, एक गाय भागती आ रही थी । उसके पीछे-पीछे एक आदमी सिर पर मुंडासा बाँधे और हाथ में डंडा लिये गाय के पीछे-पीछे भागता हुआ, उसे हाँके जा रहा था । उसकी छाती खुली थी । गले में ताबीज झूल रहा था, चिकनी खाल वाली बादामी रंग की गाय थी, मोटी-मोटी चरित सी आँखें । डर के कारण उसकी पूँछ उठी हुई थी । लगता जैसे रास्ता भटक गई है । तीनों ठिठक गये । मुँडासे वाले आदमी ने मुँह ढक लिया था ।'

24.8.2. नाटकीय शैली

स्थान-स्थान पर कथोपकथनों के रूप में नाटकीय शैली का प्रयोग हुआ है । इस शैली से कथानक के प्रवाह में सहायता मिली है और पात्रों के चरित्र भी प्रकाशित हुए हैं ।

24.8.3. व्यंग्यात्मक शैली

आलोच्य उपन्यास में कई स्थलों पर व्यंग्यात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है । डिप्टी कमिश्नर के चले जाने पर बख्शी जी व्यंग्यात्मक स्वर में कहते हैं -

'फिसाद करवाने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज' पर जब से फिसाद शुरू हुए थे बख्शी जी के दिमाग में धूल-सी उड़ने लगी थी, बस केवल इतना-भर ही बार-बार कहते रहे, 'अंग्रेज फिर बाजी ले गया । अंग्रेज फिर बाजी ले गया । पर शुरू से आखिर तक स्थिति उनके काबू में नहीं आयी ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भाषा-शैली की दृष्टि से आलोच्य उपन्यास बहुत सफल बन पड़ा है ।

24.9. उद्देश्य

प्रत्येक रचना उद्देश्य प्रधान होती है । आलोच्य उपन्यास एक सोद्देश्य उपन्यास है । इसमें उपन्यासकार का उद्देश्य अंग्रेजों द्वारा हिन्दू-मुसलमानों के द्वारा कराये गये । साम्प्रदायिक दंगों का भीषण रूप प्रस्तुत करना है । अंग्रेजों ने अपने शासन के 200 वर्षों में 'फूट डालो और राज्य करो' के सिद्धांत को अपनाया । मुरादअली के माध्यम से अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड नत्थू से सुअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा देता है । प्रतिक्रियास्वरूप मुसलमान गाय को काटकर धर्मशाला के सामने फेंक देते हैं । परिणाम स्वरूप सारे शहर और फिर उसके पश्चात् कस्बे और ग्रामों में भीषण साम्प्रदायिक दंगा फैल जाता है । डिप्टी कमिश्नर इसे रोकने का कोई प्रयास नहीं करता है । जब भीषण नर-संहार हो चुकता है, तभी-शांति व्यवस्था का प्रयास किया जाता है । पुलिस की चौकियाँ बिछाई जाती हैं । अमन कमेटी की

स्थापना कराई जाती है । सारी घटना पर अंत में उपन्यासकार यही निष्कर्ष निकालता है कि -''फिसाद कराने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज ।''

इस प्रकार उपन्यासकार को विस्तृत मारकाट और साम्प्रदायिक दंगों की घटनावली में उपन्यास के उद्देश्य को अभिव्यक्त करने में पूर्ण सफलता मिली है ।

24.10. बोध प्रश्न

1. 'तमस्' उपन्यास के माध्यम भीष्म साहनी जी क्या कहने चाहते है ? स्पष्ट कीजिए ।
2. लीजा तथा रिचर्ड के कथोपकथन संक्षेप में लिखिए ।

NOTES

NOTES

इकाई पच्चीस : 'तमस्' उपन्यास में चरित्र-चित्रण

इकाई की रूपरेखा

25.0. उद्देश्य

25.1. प्रस्तावना

25.2. पात्रों का बाहुल्य

25.3. रिचर्ड का चरित्र-चित्रण

- 25.3.1. व्यक्तित्व
- 25.3.2. व्यवहार-कुशल

25.4. नत्थू का चरित्र-चित्रण

- 25.4.1. भीषण अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त

25.5. मुरादअली का चरित्र-चित्रण

25.6. जनरैल सिंह का चरित्र-चित्रण

25.7. हरनामसिंह का चरित्र-चित्रण

25.8. राजो का चरित्र-चित्रण

- 25.8.1. सहृदयता
- 25.8.2. मानवीय उदारता

24.9. बोध प्रश्न

25.0. उद्देश्य

पिछले इकाई में शहरी तथा ग्रामीण पात्र जान लिया । कथोपकथन के बारे में जानकारी प्राप्त कर लीं ।

25.1. प्रस्तावना

अब आप इस इकाई में नत्थू, रिचर्ड, मुरादअली, जनरैल, राजो, हरनामसिंह चरित्र-चित्रण का अध्ययन करेंगे ।

25.2. पात्रों का बाहुल्य

आलोच्य उपन्यास का कथानक हिन्दू-मुसलमानों के साम्प्रदायिक दंगे से संबंधित है । दंगों के प्रसार के साथ में कथानक शहर से लेकर कस्बों एवं ग्रामों तक पहुंच जाता है । इस लिए इस उपन्यास में हिन्दू-मुसलमान, सिख, अंग्रज आदि सभी वर्ग के पात्र आये हैं क्योंकि इनमें से कुछ साम्प्रदायिक दंगे का कारण है और अधिकांश लोग इन दंगों से प्रभावित हैं । पात्र प्रायः अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । जैसे कांग्रेस वर्ग, मुस्लिम लीगी वर्ग, व्यापारी वर्ग, दुकानदार वर्ग । इनमें से किसी पात्र को प्रमुखता नहीं मिल पाई है । यहाँ हम उन्हीं पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालेंगे, जिनका कथानक में विशेष महत्व है अथवा जो घटनाओं के केन्द्र-बिन्दु हैं । इन पात्रों में प्रमुख हैं - 1. डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड, 2. नत्थू, 3. मुरादअली, 4. जरर्नल, 5. हरनामसिंह, 6.राजो ।

25.3. रिचर्ड का चरित्र-चित्रण

रिचर्ड कमिश्नर है । उसकी पत्नी लीजा है । वह पुरातत्व, इतिहास और साथ ही प्रकृति का भी प्रेमी है । उसके रूप में अंग्रेज अधिकारियों का प्रतिनिधि चरित्र सामने आता है । वह अपनी योजना से हिन्दू-मुसलमानों में धर्म के नाम पर भीषण साम्प्रदायिक दंगा करा देता है ।

25.3.1. व्यक्तित्व

उपन्यासकार ने रिचर्ड के व्यक्तित्व का प्रकाशन निम्नलिखित प्रकार से किया है -

''यहाँ पर तो वह भारतीय इतिहास का मर्मज्ञ था, भारतीय कला का पारखी । हाँ, जब वह प्रशासक की कुर्सी परी बैठता तो वह ब्रिटेश साम्राज्य का प्रतिनिधि था, और उन नीतियों को क्रियान्वित करता, जो लन्दन से निर्णीत होकर आती थीं । एक कौम को दूसरे कौम से अलग रखना, एक भावना को दूसरी भावना से अलग रखता उसके प्रशिक्षण की, उसके स्वभाव की विशिष्टता थी । वह एक तरह के काम से बिल्कुल दूसरी तरह के काम में बड़ी आसानी से अपनने को ढाल लेता था । वह निजी रुचियों को सरकारी काम से अलग रख सकता था । एक विशेष अनुशासन में उसका जीवन घूमता था । सप्ताह में तीन दिन वह कचहरी करता था, जिला मजिस्ट्रेट के नाते मुकद्दमा सुनता था । जब जज की कुर्सी पर बैठता तब वह भूल जाता कि वह हाकिमों का नुमाइन्दा है और नेटिव लोगों के मुकद्दमे सुन रहा है । तब वह न्याय करता, इण्डियन पैनल कोड की धाराओं को यथावत् लागू करता । एक क्षेत्र का विचार और भावनाएँ दूसरे क्षेत्र में उलझ नहीं पाती थीं । इसी कारण उसे मानसिक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता था, वह कभी भी द्विविधा का शिकार नहीं होता था । उसके अपने विश्वास क्या हैं, धारणाएँ क्या हैं, इनके बारे में निश्चय कुछ भी कह पाना कठिन था, शायद रिचर्ड ने यह सवाल अपने से भी कभी से पूछा होगा । जब कभी द्विविधा उठती तो वह अपने संवेदन को, अपने विचारों को अपनी डायरी में उँडेल देता था । प्रशासन के क्षेत्र में उसकी निजी मान्यताओं का कोई दखल नहीं था, बल्कि वे असंगत थीं । यह विचार कि हमारा आचरण हमारी मान्यताओं के अनुरूप होना चाहिए, एक ऐसा भोंडा आदर्शवाद है, जिससे सिविल सर्विस में नाम लिखाते ही अफसर अपना पिण्ड छुड़ा लेता है । फिर रिचर्ड को अपनी भूमिका क्या

थी, प्रशासन में उसका विशिष्ट योगदान किस बात में था ? वह उस योग्यता में पाया जाता था, जिनसे वह ब्रिटिश सरकार की नीतियों को क्रियान्वित करता था, उस पैनी दृष्टि में था, उस सूझ में था जिससे वह स्थिति को समझ लेता था, तथ्यों को पकड़ लेता था, उस चौकसी में था, जिसमें, बिना किसी आहट के, ब्रिटिश सरकार की नीतियों को अमली जामा पहनाया जाता था । यों तो यह सवाल ही असंगत है कि उसकी मान्यताएँ क्या थीं । कोई भी व्यक्ति अपना व्यवसाय चुनते समय उसके नैतिक पक्ष के बारे में सोचता ही कब है । वह तो केवल निजी लाभ और निजी हित के बारे में ही सोचता है ।''

25.3.2. व्यवहार-कुशल

रिचर्ड बड़े कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में सामने आता है । उसने सुअर कटवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा दिया । इस प्रकार उसने साम्प्रदायिक दंगे का सूत्रपात करा दिया । वह चाहता तो इस दंगे को रोक सकता था । परंतु उसका और उसकी सरकार का स्वार्थ इसी में है कि हिन्दू-मुसलमान परस्पर धर्म के नाम पर लड़ते रहे, अन्यथा वे एक होकर सरकार से लड़ेंगे ।

जन-प्रतिनिधियों से रिचर्ड बड़े व्यंग्य से कहता है कि वे उसके पास व्यर्थ ही आये हैं । उनको तो पण्डित नेहरू और गृहमंत्री सरदार बल्देवसिंह के पास जाना चाहिए था । क्योंकि असली सरकार तो उन्हीं की है । इतने पर भी वह बड़ी चालाकी से दंगा रोकने का आश्वासन देता है । परंतु वह करता कुछ भी नहीं है ।

जब साम्प्रदायिक दंगे से भीषण विनाश हो चुकता है, तभी वह वाहवाही लूटने के लिए शांति के प्रयास में इस प्रकार लग जाता है, मानों वह शांति का बड़ा इच्छुक हो । वह हवाई जहाज से शांति की घोषण कराता है, लाशों को जलाने का प्रबंध करता है, हेल्थ आफिसर को कुओं आदि की सफाई का आदेश देता है,

हानि का ब्यौरा बनवाने लगता हे, अमन कमेटियाँ कायम करवाता है । परंतु रिचर्ड अपनी मक्कारी से बाज नहीं आता । वह अमन कमेटी में साम्प्रदायिकता के बीज बो देता है । उसी के प्रोत्साहन से मुस्लिम लीग कांग्रेस को हिन्दुओं की संस्था घोषित करती है और पाकिस्तान की माँग उठाती है । इसी के परिणामस्वरूप आगे चलकर देश टुकड़ें हो जाते हैं । उसके लिए बख्शी जी ने सत्य ही कहा है -

"फिसाद करवाने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज । भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज ... " पर जब से फिसाद शुरू हुए थे बख्शीजी के दिमाग में धूल-सी उड़ने लगी थी, बस केवल इतना भर ही बार-बार कहते रहे, 'अंग्रेज फिर बाजी ले गया, 'अंग्रेज फिर बाकी ले गया ।' पर शुरू से आखिर तक स्थिति उसके न में नहीं आयी ।"

25.4. नत्थू का चरित्र-चित्रण

नत्थू एक ऐसा पात्र है, जिसे साम्प्रदायिक, दंगे का अस्व बनाया गया है । रिचर्ड कमेटी के कर्मचारी मुरादअली के द्वारा नत्थू से अपने मन्तव्य को पूरा करने के लिए सुअर मरवाता है । मुरादअली नत्थू को पाँच रुपये पेशगी देकर यह काम सौंप देता है । नत्थू निर्दोष है । उसे यह नहीं मालूम कि सुअर का प्रयोग साम्प्रदायिक दंगा कराने में किया जायगा ।

25.4.1. भीषण अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त

नत्थू के सामने जब यह तथ्य आ जाता है कि उससे जो सुअर मरवाया गया, उसी के परिणामस्वरूप यह भीषण साम्प्रदायिक दंगा हुआ, तब वह भय और भीषण अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त हो जाता है । उसे भय इस बात का है कि कहीं उसके किए हुए दुष्कर्म का रहस्य जनता में प्रकट न हो जाय और हृदय में भीषण अन्तर्द्वन्द्व गलत कार्य करने के कारण है । वह इस तथ्य को पहले

अपनी पत्नी से भी छिपाता है, परंतु पीछे पश्चाताप करता हुआ बता देता है । निम्नलिखित उदाहरण में नत्थू के हृदय का यही अन्तर्द्वन्द्व अभिव्यक्त हुआ है -

''अगर लोगों को पता चल जाय कि उसी ने सुअर मारा था तो क्या होगा, इस बेचैनी में कभी उसका मन करता कि भागकर घर चला जाए और अन्दर से साँकल चढ़ाकर पड़ा रहे, कभी उसका मन करता गलियों में घूमता भटकता रहे । कभी कुछ, कभी कुछ । मैं घर जाऊँगा, रात पड़ते ही मोतिया रंडी के पास जाऊँगा । वह एक रुपया माँगेगी, तो मैं पाँच रुपया दूंगा । रात भर उसके पास रहूँगा ।''

X X X X

''कोई धूमिल अस्पष्ट-सी अकुलाहट थी । जो नत्थू के दिल को अभी भी मथ रही थी । इस धुकधुकी के कारण वह सड़कों पर चक्कर लगाता रहा था । इसी कारण उसने शराब पी ली थी ।''

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नत्थू चमार निदोर्ष् है । उसे साम्प्रदायिक दंगा फैलाने का अस्त्र बनाया गया था । वह अनजाने में पाँच रुपये के लालच में मुरादअली के षड्यंत्र में फँस गया था । उसके हृदय का अन्तर्द्वन्द्व उसकी निर्दोषता सिद्ध करता है । कथानक में उसकी स्थिति केन्द्रीय हो गयी है ।

25.5. मुरादअली का चरित्र-चित्रण

मुरादअली कमेटी का कर्मचारी होने के कारण अपना प्रभाव रखता है । वह नत्थू चमार को मरे पशुओं को उठावा देता है । वह सलोतरी साहब के लिए नत्थू को सुअर मारने के लिए पाँच रुपया देता है । वास्ताव में वह सुअर डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड ने साम्प्रदायिक दंगे के लिए मरवाया था । इस सुअर को ही मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवाकर अंग्रेजों के द्वारा साम्प्रदायिक दंगे प्रारंभ करा दिए जाते हैं ।

इस प्रकार मुरादअली एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो देशद्रोह के कार्य करता है और देश में गुलामी की स्थिति कायम रखना चाहता है ।

मुरादअली का चरित्र एक देशद्रोही व्यक्ति का चरित्र है । वह अंग्रेजों से मिलकर साम्प्रदायिक दंगा कराने में सहायक है । उसे अपने घृष्टित कार्य का तनिक भी पश्चाताप नहीं है ।

मुरादअली बड़ी मक्कारी से अपनी स्थिति सुदृढ़ करता है । भीषण साम्प्रदायिक दंगे का मुख्य कारण मुरादअली अंत में शांति स्थापना की मंडली के साथ में नारे लगाता हुआ देखा जाता है ।

"तभी ड्राइवर के साथ वाली सीट पर बैठे मुरादअली ने नारे लगाना शुरू कर दिया और गूँजते नारों के बीच अमन की बस अपने शांति-अभियान पर निकल पड़ी ।"

25.6. जनरैल का चरित्र-चित्रण

आलोच्य उपन्यास में जनरैल एक आदर्श कार्यकर्ता के रूप में सामने आता है । वह काँग्रेस का झण्डा उठाकर प्रभात-फेरी में आगे-आगे चलता है,अमन की मुनादी भी करता है । उसका चरित्र सर्वथा एक राष्ट्रीय सेवक का चरित्र है । कथानक में जनरैल की यह स्थिति प्रारंभ से लेकर अंत तक बनी रहती है ।

जनरैल का परिचय देता हुआ उपन्यासकार कहता है -

"जनरैल ही एक ऐसा आदमी था, जो आंदोलन हो या न हो, जेल जाता रहता था, जलसे हों या न हों शहर में स्वयं तकरीरें करता फिरता था । हर आये दिन शहर में कहीं-न-कहीं उसकी पिटाई हो जाया करती थी । बगल में छोटा-सा बेंत दवाएं वह सदा कभी एक मुहल्ले में, कभी दूसरे मुहल्ले में घूमता नजर आता था । मुनादी करने के लिए ताँगा निकलता, तो ताँगे निकलता, तो ताँगे में बैठने वाले तीन आदमियों में से एक आदमी

जरूर जनरैल हुआ करता था । जलसा शुरू होने पर सबसे पहले जनरैल की तकरीर होती थी, जिसमें उसकी खोंखली फुसफुसाती आवाज केवल आगे बैठ चंद आदमियों तक ही पहुँच पाती थी ।''

जनरैल अपनी कर्तव्य-परायणता में पीछे नहीं रहता । वह हिन्दु-मुसलमानों के दंगों में भी इसी प्रकार निर्भीक बना हुआ दिखाई देता है ।

जनरैल को जेल में सदैव 'सी क्लास' की यातना मिलती । ''उसका न घर न घाट, न बीबी न बच्चा, न काम न धाम, हफ्ते में दो तीन बार कहीं-न-कहीं पिट जाता था । पुलिस के लाठी चार्ज में जहाँ बाकी लोग जान बचाकर निकल जाते थे, वहाँ जनरैल अपनी सनक का मारा अपनी छोटी-सी झुर्रियों भरी छाती फैलाये खड़ा रहता था और पसलियाँ तुड़वाकर आता था ।''

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जनरैल ऐसा पात्र है, जिसे उन राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानियों में याद किया जा सकता, जो सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय चरित्र और देश-भक्त हैं ।

25.7. हरनामसिंह का चरित्र-चित्रण

हरनामसिंह ढोक इलाहीबख्श ग्राम का दुकानदार है । वह सिख है । ग्राम में उसकी दुकान अच्छी चलती है । ढोक इलाहीबख्श पर खानपुर के मुसलमान बलवाइयों का हमला हो जाता है । हरनामसिंह को अपनी रक्षा का कोई उपाय नहीं दीखता और वह अंधेरे में अपनी पत्नी बंतों सहित गाँव से निकल पड़ता है । हरनामसिंह के साथ उसकी पत्नी बंतो है । रास्ता कँकरीला, पथरीला और जंगल से भरा हुआ है । मार्ग में ऊँचे-नीचे टीले हैं । वह मार्ग से दूर हटकर नदी के कछार में चल रहा है । ढोल की आवाज और 'अल्लाह-हो-अकबर' की गूँज उसे भयभीत करती है ।

भूखा-प्यासा हरनाम जिस गाँव में पहुँचता है, वह गाँव भी मुसलमानों का है । गाँव के जिस पहले घर में हरनामसिंह शरण

लेने के लिए कुंडी खटखडाता है, वह भी मुसलमान का ही है । गृहस्वामिनी राजो और उसकी बहू अंकरा घर में है । पति अहसान अली तथा पुत्र रमजान रात में बलवा करने गये है, सवेरा होते ही आ जायेंगे । इतने पर भी मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत राजो उनको शरण देती है । परंतु पति-पुत्र के डर के कारण उनको टाँड में और पीछे भुस भरे कमरे में छिपा देती है । नूरी और उसके पिता आ जाते हैं । बहू अंकारा सारा भेद खोल देती है । पुत्र नूरी जो सख्त है, हरनामसिंह का वध करना चाहता है । परंतु अहसानअली हरनामसिंह का परिचित है । अतः राजो के प्रयास से हरनामसिंह और बन्तो की जान बच जाती है । राजो दोनों को अंधेरे में ही उनके गाँव के मार्ग तक सकुशल पहुँचा जाती है ।

हरनामसिंह को गाँव में अपना सब कुछ बरबाद मिलता है । पुत्र को मुसलमान बना लिया गया और पुत्री जसबीर कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर चुकी है ।

हरनामसिंह राजो के मानवीय गुणों की प्रशंसा करता है । वह दंगे में बरबाद वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है ।

25.8. राजो का चरित्र-चित्रण

आलोच्य उपन्यास में राजो ही एक ऐसी नारी है जो मुसलमान होते हुए भी एक हिन्दू परिवार को शरण देती है और उसकी रक्षा करती है । वह उसे गाँव की सीमा के बाहर तक सुरक्षित पहुँचा भी आती है । वह हरनामसिंह की कृपाण लौटा देती है और उसके मंगल की कामना करती है ।

25.8.1. सहृदयता

राजो कोमल हृदय की नारी है । वह अपने घर में हिन्दू शरणार्थियों को देखकर किंकर्तव्य-विमूढ़ की स्थिति में हो जाती है । परंतु हरनामसिंह और बन्तो' की दयनीय दशा पर उनका हृदय पिघल उठता है । वह उनको लस्सी और भोजन देने के

पश्चात् पहले टाँड पर और पीछे भुस की कोठरी में छिपा देती है ।

25.8.2. मानवीय उदारता

राजो एक आदर्श नारी का रूप है, वह अपने पति-पुत्र से हरनामसिंह और उनकी पत्नी बन्तो की रक्षा करती है । उसका प्रयास रहता है कि इन शरणार्थियों का अनिष्ट न हो पाये । राजो हरनामसिंह और बन्तो को गाँव के बाहर आकर विदा करती है -

"मैं नहीं जानती, मैं तुम्हारी जान बचा रही हूँ या तुम्हें मौत के मुँह में झोंक रही हूँ । चारों तरफ आग लगी है । ये तुम्हारे ट्रंक से मिले हैं, तुम्हारे दो गहने । मैं निकाल लायी हूँ । तुम्हारे आगे कठिन समय है । पास में दो गहने हुए तो सहारा होगा ।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आलोच्य उपन्यास में राजो का चरित्र सर्वाधिक संवेदनशील और आदर्श पूर्ण है ।

25.9. बोध प्रश्न

1. राजो का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
2. नत्थू का चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

• NOTES

NOTES

इकाई छब्बीस : उपन्यास कला के आधार पर 'तमस्' की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

26.0. उद्देश्य

26.1. प्रस्तावना

26.2. कथोपकथन

- 26.2.1. संवादों अथवा कथोपकथन का विस्तार
- 26.2.2. संवादों के प्रकार पात्रों के चरित्रोद्घाटन में सहायक
- 26.2.3. कथा-विकास में सहायक
- 26.2.4. वातावरण की सृष्टि करने वाले संवाद
- 26.2.5. पाठकों से मनोभावात्मक तादात्म्य स्थापित करने में सहायक
- 26.2.6. संवादों के आवश्यक गुण (विशेषताएँ)
- 26.2.7. संवाद लेखन का उद्देश्य
- 26.2.8. संवादों की भाषा
- 26.2.9. संवाद-योजना का सम्यक् मूल्यांकन

26.3. भाषा-शैली

26.4. पात्रानुकूलता

26.5. स्वाभाविकता

26.6. संस्कृत की तत्समता

26.7. शैली

26.7.1. वर्णात्मक शैली

26.7.2. विवेचनात्मक शैली

26.7.3. विश्लेषणात्मक शैली

26.7.4. भावात्मक शैली

26.8. बोध प्रश्न

26.0. उद्देश्य

पिछले इकाई में आपने राजो, नत्थू, हरनामसिंह, मुरादअली तथा रिचर्ड आदि के चरित्रगत विशेषताओं के बारे में अध्ययन किया ।

26.1. प्रस्तावना

अब आप इस इकाई में उपन्यास कला के आधार पर 'तमस' उपन्यास की विवेचना करेंगे ।

26.2. कथोपकथन

उपन्यास मानव-जीवन का सजीव चित्र होता है । उसमें दैनिक जीवन से संबंधित घटनाओं का वर्णन किया जाता है तथा उसके मूल में पात्र होते हैं । इन्हीं पात्रों के आपसी वार्तालाप से जहाँ कथानक को गति मिलती है वहाँ चरित्र-चित्रण में भी सहायता मिलती है । उपन्यास की सफलता के लिए कथोपकथन न केवल कथा को गति प्रदान करते हैं, वरन् पात्रों के चरित्र एवं उनकी अनुवृत्तियों के विश्लेषण में भी सहायता प्रदान करते हैं । इसलिए कथोपकथन सरल, स्वाभाविक, संक्षिप्त, पात्रानुकूल तथा नाटकीय गुणों से युक्त होने चाहिए । संवादों के माध्यम से पूर्व घटनाओं की सूचना तथा विगत घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है और इससे उपन्यास का अनावश्यक विस्तार रुक जाता है । वर्तमान घटनाओं की समीक्षा तथा उनकी महत्ता का भी लेखक संवादों के माध्यम से उल्लेख करता है । संवादों से घटनाक्रम में स्वाभाविकता आ जाती है तथा पाठकों को पात्रों की मनःस्थिति और घटनाओं को समझने में सुगमता होती है ।

'तमस' उपन्यास का विकास साम्प्रदायिक दंगे के प्रारंभ, विकास और परिणाम में हुआ है । अतः वर्णात्मकता अधिक है और कथोपकथनों को कम ही स्थान मिला है । जो भी कथोपकथन आये हैं, वे नाटकीय, पैने और सटीक हैं ।

26.2.1. संवादों अथवा कथोकथन का विस्तार

विस्तार के दृष्टिकोण से संवाद को प्रकार के होते हैं - (क) दीर्घ, (ख) संक्षिप्त (लघु) । साहनी जी प्रायः संक्षिप्त संवाद लिखने के पक्षपाती हैं, परंतु जहाँ वर्णन की प्रधानता है, वहाँ यह दीर्घ हो गए हैं । ये संवाद घटना तथा पात्रानुकूल हैं और चरित्र-प्रकाश में सहायक हैं । व्यर्थ का विस्तार कहीं भी नहीं है । संक्षिप्त संवाद का उदाहरण द्रष्टव्य है -

'कहो न, भाभी ।'

'अगर तकलीफ न हो तभी ।'

'तुम कहो भी ।'

'मेरी और मेरी जिठानी के जेवरों का एक डब्बा घर में पड़ा है, वह निकलवाना है । जब आये थे, तो थोड़ा-सा सामान लेकर चले आए थे । मैं कुछ साथ नहीं लायी ।'

'इसमें क्या मुश्किल है भाभी । छोटा-सा काम है, कहाँ रखे हैं ? '

'अधछत्ती वाली कोठरी में ।'

'उस पर ताला तो चढ़ा होगा ? इतना बड़ा सिक्के का ताला ।'

'मैं चाबियाँ देती हूँ । मैं जगह भी समझा दूँगी ।'

'निकाल लाऊँगा । आज ही निकाल लाऊँगी ।'

26.2.2. संवादों के प्रकार - पात्रों के चरित्रोद्घाटन में सहायक

साहनी जी संवादों के द्वारा पात्रों के चरित्रोद्घाटन में पूर्ण प्रवीण हैं । आप ऐसे संवादों की योजना करते हैं जो पात्रों के चरित्र एवं उसकी विशेषताओं को उद्घोषित करते हैं । इस दृष्टि से लीजा और रिचर्ड का निम्नलिखित कथोपकथन द्रष्टव्य है -

'तुम कोई भी बात मेरे साथ संजीदगी से नहीं करते ।' लीजा ने उलाहना के स्वर में कहा -

'संजीदगी से बात करने में तुक ही क्या है !' रिचर्ड ने

खोये-खोये मन से कहा । 'सुनो लीजा यहाँ पर शायद कोई गड़बड़ हो ।'

लीजा ने आँखें ऊपर उठायीं और रिचर्ड के चेहरे की ओर देखने लगी ।

'क्या गड़बड़ होगी ? फिर जंग होगी ?'

'नहीं मगर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनातनी बढ़ रही है, शायद फसाद होंगे ।'

'ये लोग आपस में लडेंगे ? लन्दन में तो तुम कहते थे कि ये लोग तुम्हारे खिलाफ लड़ रहे हैं ।'

'हमारे खिलाफ भी लड़ रहे हैं और आपस में भी लड़ रहे हैं ।'

'कैसी बातें कर रहे हो ? क्या तुम फिर मजाक करने लगे ?'

'धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं, देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं ।' रिचर्ड ने मुस्काराकर कहा ।

'बहुत चालाक नहीं बनो, रिचर्ड । मैं सब जाती हूँ । देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो । क्यों, ठीक हैं ना ?'

'हम नहीं लड़ाते लीजा, ये लोग खुद लड़ते हैं ।'

'तुम इन्हें लड़ने से रोक भी तो सकते हो । आखिर हैं तो ये एक ही जाति के लोग ।'

रिचर्ड को अपनी पत्नी का भोलापन प्यारा लगा । उसने झुककर लीजा का गाल चूम लिया । फिर बोला -

'डार्लिंग, हुकुमत करने वाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन-सी समानता पायी जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक'-दूसरे से अलग हैं ।'

तभी खानसामा ट्रे, उठाये चला आया । उसे देखकर लीता बोली - 'यह हिन्दू है या मुसलमान ?'

'तुम बताओ ।' रिचर्ड ने कहा ।

लीजा देर तक खानसामे की ओर देखती रही जो ट्रे का सामान रख चुकने के बाद बुत-का-बुत बना खड़ा था ।

'हिन्दू है ।'

रिचर्ड हँस दिया : 'गलत ।'

'गलत क्यों ?'

'फिर ध्यान से देखो ।'

लीजा ने ध्यान से देखा, 'सिख है' इसके दाढ़ी है । सिर पर टर्बन है ।'

रिचर्ड फिर हँस दिया । खानसामा अभी भी मुर्तिवत् निश्चेष्ट खड़ा था । उसके चेहरे की एक भी मांसपेशी नहीं हिली थी ।

'इसने दाढ़ी को तराश रखा है । सिख लोग दाढ़ी को तराश नहीं सकते, यह उनके धर्म के खिलाफ है ।'

'यह तो तुमने मुझे नहीं बताया था ।' लीजा बोली ।

'मैंने कितनी और बातें तुम्हें नहीं बतायी हैं ।'

'जैसे ?'

'जैसे यह कि सिक्खों के पाँच निशान होते हैं, बालों के अलावा चार चिह्न और हैं, हिन्दुओं के सिर पर चुटिया होती है और मुसलमानों के भी अपने निशान होते हैं । फिर खान-पान में भी हिन्दू गाय का माँस नहीं खाते और मुसलमान सुअर का माँस नहीं खाते, सिक्ख लोग झटके का माँस खाते हैं जबकि मुसलमान लोग हलाल का मांस खाते हैं ।'

26.2.3. कथा-विकास में सहायक

'तमस' उपन्यास के संवाद कथा-विकास में पूर्ण सहायक हैं तथा वे उसे गति प्रदान करते हैं । निम्नलिखित कथोपकथन साम्प्रदायिक दंगों की भूमिका प्रस्तुत कर देता है -

बख्शीली ने सामने की ओर देखा । गली के बाहर, सड़क के पार एक मस्जिद थी जिसे 'केलों की मस्जिद' कहा जाता था ।

'क्या है ?'

'आपको कुछ नजर नहीं आया ? मस्जिद के दरबाजे के नीचे सीढ़ी की ओर देखिए ।'

महस्जद की सीढ़ी पर कोई काली-काली चीज पड़ी थी ।

'कोई आदमी सुअर मारकर फेंक गया है ।'

बख्शीजी ने मेहता के चेहरे की ओर देखा, मानो कह रहे हों, 'देखा ! मैंने कहा था ना, कोई गड़बड़ है !'

सभी ने घूमकर उस ओर देखा, मस्जिद की सीढ़ी पर एक काले रंग का बोरा-सा रखा नजर आया जिसमें से दो टाँगे बाहर को निकली हुई थीं । मस्जिद के हरे रंग का दरवाजा बंद था ।

'लौट चलो, यहीं से लौट चलो ', मास्टर रामदास ने धीरे-धीरे से कहा ।

'आख थू !' कश्मीरीलाल ने सुअर की ओर देखकर कहा और मुँह फेर लिया ।

'बख्शीजी, यहीं से लौट चलें । आगे मुसलमानों का मुहल्ला है ।' रामदास ने फिर कहा ।

'किसी ने शरारत की है ।' मेहता बुदबुदाया ।

'आपको पक्का मालूम है कि 'सुअर ही है ?' मेहताजी बोले ।

'क्या मालूम कोई और जानवर हो ।'

'कोई और जानवर होगा तो मुसलमान इतना बिगडेंगे ?' बख्शीजी ने खीझकर कहा ।

जनरैल भी अपनी घनी भौहों के बीच छिपी छोटी-छोटी आँखें मस्जिद की ओर गाड़े खड़ा था, छूटते ही बोला -

'अंग्रेज ने फेंका है !'

उसके नथुने फड़कने लगे और वह फिर से चिल्लाकर बोला, 'अंग्रेज की शरारत है । मैं जानता हूँ ।'

'हाँ-हाँ, जनरैल, अंग्रेज की ही शरात है, मगर इस वक्त तुम चुप रहो ।' बख्शीजी ने उसे समझाते हुए कहा ।

'पिछली गली में घूम जायें ।' मास्टर रामदास ने फिर कहा । पर अब की बार जनरैल उस पर बरस पड़ा ।

'तुम बुजदिल हो । यह अंग्रेज की शरारत है - मैं उसका भण्डाफोड़ करूँगा ।'

26.2.4. वातावरण की सृष्टि करने वाले संवाद

उपन्यासकार कथोपकथन के द्वारा ऐसे वाताचरण की सुष्टि करता है कि घटना यथार्थ लगाने लगती है । निम्नलिखित कथोपकथन में गाँव के दंगाइयों के आक्रमण से उत्पन्न वातावरण सजीव हो उठा है -

ढोल बजने की आवाजें नजदीक आने लगीं । 'या अली !' का शोर भी नजदीक से सुनाई दिया । तभी पिछवाड़े से जोर का नारा बुलंद हुआ -

'अल्लाह-ओ-अकबर !'

क्षणभर के लिए हॉल के अंदर सकता-सा छा गया । फिर गुरुद्वारे के अंदर उत्तेजना की लहर दौड़ गयी ।

'जो बोले सो निहाल, सत सिरी अका ल !' का जवाबी मोर्चे पर पहुँच जाओ !'

जसबीर कौर का हाथ अपनी किरपान की मूठ पर पहुँच गया । सिंहों ने लपक-लपककर दीवार के साथ रखी अपनी-अपनी तलवार उठा ली । सारी संगत उठकर खड़ी हो गयी थी ।

'तुर्क ! तुर्क आ गये ! तुर्क आ गये !' सबकी जवान पर था । 'तुर्कों का लश्कर आ गया !'

'तुर्क आ गये !' जसबीर कौर ने भाव-विह्वल आवाज़ से कहा और अपने सिर पर से चुन्नी उतारकर गले में डाल ली और पास खड़ी स्त्री को गले से लगा लिया ।

'तुर्क आ गये ?' उसने भाव-विह्वल होकर कहा ।

स्त्रियों ने अपने दुपट्टे उतारकर गले में डाल लिये थे और 'तुर्क आ गये, तुर्क आ गये !' कहती हुई एक-दूसरी के गले मिल रही थीं । गुरु के सिंह भी एक-दूसरे के साथ बगलगीर होकर यही शब्द दोहराने लगे थे ।

'सब अपनी-अपनी जगह पहुँच जाओ !

कुछेक सिंह ने बाल खोल लिये थे और तलवारें म्यानों में से निकाल ली थीं ।

'तुर्क आ गये ! तुर्क आ गये !'

फिर एक साथ तीन कण्ठों से आवाज आयी -

'जो बोले सो .... निहाल !'

फिर से सारा गुरुद्वारा गूँज उठा ।

'सत सिरी अका ल !'

26.2.5. पाठकों से मनोभावात्मक तादात्म्य स्थापित करने में सहायक

'तमस' उपन्यास की कथा जैसे-जैसे बढ़ती है, वैसे-वैसे पाठक घटनावली और उससे संबंधित पात्रों से भावात्मक संबंध स्थापित करता जाता है । दंगाइयों से घिरे लोगों तथा मारकाट के प्रसंगों के कथोपकथन संक्षिप्, संवेदनात्मक और नाटकीय हैं । निम्नलिखित कथोपकथन में नत्थू सुअर मारने के पश्चाताप में गल रहा है -

'हाय नहीं, आज नहीं, मेरा मन नहीं करता । देखो तो बाहर क्या है रहा है ? लोगों के घर जल रहे हैं ।'

नत्थू बेचैन-सा खड़ा हो गया और देर तक ठिठका खड़ा रहा ।

'क्या है ?' उसकी पत्नी घबराकर बोली, तुम इतने गुमसुम क्यों हो गये हो ? सच-सच बताओ, तुम्हें मेरे सिर की कसम !'

पर नत्थू चुपचाप हटकर खाट पर जा बैठा ।

'क्या हुआ है ?'

'कुछ नहीं ।'

'कुछ तो हुआ है । तू मुझसे छिपा रहा है ।'

'कुछ नहीं ।' सने फिर से कहा ।

पत्नी नत्थू के पास आ गयी और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली, 'तू बोलता क्यों नहीं ? '

'कुछ कहने को हो तो बोलू ।' उसेन धीरे से कहा ।

चाय बना दूँ ? ठहर, मैं चाय बना देती हूँ ।'

'मुझे चाय नहीं चाहिए ।'

'अभी तो खुद बनाने को कह रहा था, अभी चाय नहीं चाहिए ।'

'नहीं, मुझे नहीं चाहिए ।'

'अच्छा फिर चल, खाट पर चल ।' उसकी पत्नी ने हँसकर कहा ।

'नहीं, खाट पर नहीं चलूँगा ।'

'नाराज़ हो गया ? तू मेरे साथ बात-बात पर नाराज होने लगा है ।' पत्नी ने उलाहने के स्वर में कहा ।

नत्थू चुप बना रहा । वह सचमुच बिसूरते की तरह व्यवहार कर रहा था ।

'तू कल रात कहाँ गया था ! तूने मुझे भी नहीं बताया ।' नत्थू की पत्नी ने कहा और उसके पास फर्श पर बैठ गयी ।

नत्थू ने ठिठककार पत्नी की ओर देखा । इसे जरूर पता चल गया है । सभी को देर-सवेर पता चल जायेगा । नत्थू को लगा जैसे उसकी टाँगे काँपने लगी हैं ।

'बतायेगा नहीं तो मैं यहीं सिर पीट लूँगी । तू कभी भी मुझसे दिल की बात नहीं छिपाती था, आज क्यों छिपाने लगा है ?'

26.2.6. संवादों के आवश्यक गुण (विशेषताएँ)

'तमस' घटना प्रधान उपन्यास है । उसके संवाद नाटकीय होने के साथ-साथ स्वाभाविक, पात्रानूकूल, संक्षिप्त, प्रवाहयुक्त, भावानुकूल तथा सम्प्रेषणीय हैं । अधिकांश संवाद व्यंजनापूर्ण हैं । सभी गुणों से युक्त निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है -

लीजा ने हिन्दुओं और मुसलमानों की स्थिति के बारे में सुन रखा था, लेकिन वह इनके बारे में जानती बहुत कम थी ।

'मैं तो अभी तक हिन्दू और मुसलमान को अलग-अलग से पहचान भी नहीं सकती । तुम पहचान लेते हो रिचर्ड, कि आदमी हिन्दू है या मुसलमान ?'

'हाँ, मैं पहचान लेता हूँ ।'

'घर का खानसामा क्या हिन्दू है या मुसलमान ?'

'मुसलमान है ।'

'तुम कैसे जानते हो ।'

'उसके नाम से, और उसकी छोटी-सी दाढ़ी से, और उसके पहनावे से भी, फिर वह नमाज पढ़ता है, यहाँ तक कि उसके खान-पान के तरीके भी अलग हैं ।

'तुम्हें सब मालूम है, रिचर्ड ?'

'कुछ-कुछ मालूम है ।'

'तुम कितना-कुछ जाते हो, तुम्हें ढेरों बातें मालूम हैं, मैं कुछ भी नहीं जाती । तुम मुझे भी बताना रिचर्ड, मैं भी समझना चाहती हूँ । और वह तुम्हारा सेक्रेटरी, वह जो उस रोज स्टेशन पर आया था, सफेद-सफेद दाँतों वाला, वह कौन है ? हिन्दू या मुसलमान ?'

'वह हिन्दू है ।'

'तुमने कैसे जाना ।'

'उसके नाम से ।'

'तुम नाम से ही जान जाते हो ।'

'बड़ा आसान है, लीजा । मुसलमानों के नामों के अंत में अली, दीन, अहमद, ऐसे-ऐसे शब्द लगे रहते हैं जबकि हिन्दुओं के नामों के पीछे ऐसे शब्द जैसे लाल, चंद, राम लगे रहते हैं । रोशनलाल होगा तो हिन्दू, रोशनदीन होगा तो मुसलमान, इकबाल होगा तो हिन्दू और जो इकबाल अहमद होगा तो मुसलमान ।'

26.2.7. संवाद लेखन का उद्देश्य

संवाद-लेखन का उद्देश्य पात्रों के चरित्र-चित्रण, कथा-विकास में गति उत्पन्न करना तथा अपनी विचारधारा की पुष्टि एवं प्रचार करना होता है । साहनी जी ने 'तमस' उपन्यास में स्पष्ट किया है कि साम्प्रदायिक दंगे कराने वाले अंग्रेज ही थे । बख्शी जी कहते हैं -

''फिसाद करने वाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर सेबेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अंग्रेज.... ' पर जब से फिसाद शुरू हुए थे बख्शहली के दिमाग में धूल-सी उड़ने लगी थी, बस केवल इतना-भर ही बार-बार कहते रहे, 'अंग्रेज फिर बाजी ले गया, अंग्रेज फिर बाजी ले गया ।' पर शुरू से आखिर तक स्थिति उनके काबू में नहीं आयी ।'

26.2.8. संवादों की भाषा

'तमस' उपन्यास में साहनी जी ने भाषा पात्रानुकूल रखी है । नारी पात्रों की भाषा मधुर तथा लोचदार है । गम्भीर विषयों के लिए भाषा गम्भीर तथा चिंतन प्रधान है । खंडन-भंडन तथा तर्क-वितर्क के लिए भाषा का कटु रूप प्रयोग किया गया है । विनयशील संवादों की भाषा में हास्य है । संवादों के माध्यम से पात्रों की मनःस्थिति का चित्रण भाषा के द्वारा किया गया है । भाषा में यत्रतत्र उर्दू और अंग्रेजी के चलते हुए शब्दों का प्रयोग है । इससे भाषा की प्रेषणीयता बढ़ गई है ।

26.2.9. संवाद-योजना का सम्यक् मूल्यांकन

'तमस' उपन्यास के विवेचन के पश्चात् पता चलता है कि साहनी के प्रस्तुत उपन्यास का कथानक अंग्रेजों द्वारा कराये जाने वाले साम्प्रदायिक दंगों से संबंधित है ।

पात्रों के कथोपकथनों में तत्कालीन राजनीतिक पार्टियों की हलचल और साम्प्रदायिकता-त्रस्त वातावरण सामने आ जाता है । साम्प्रदायिक दंगों से धन-जन की विनाश-लीला का चित्र साकार हो उठा है ।

अन्त में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है 'तमस' उपन्यास के संवाद नाटकीय तथा व्यंजनापूर्ण हैं । उनमें स्वाभाविकता, प्रवाहयुक्तता, पात्रानुकूलता, भावानुकूलता तथा परिस्थितिनुकूलता विशेष रूप से है ।

26.3. भाषा-शैली

भाषा

1. 'तमस' की भाषा में पात्रानुकूलता का गुण है ।
2. भावात्मक स्थलों की भाषा में प्रवाह की तरलता है ।
3. चिन्तन के स्थलों की भाषा गंभीरता लिए है ।
4. करण-प्रसंगों की भाषा में कोमलता, भाव-प्रवणता और स्निग्धता है ।
5. आवेश के प्रसंगों की भाषा में क्षिप्रता और उग्रता है ।
6. सरसता और सरलता भाषा का प्रमुख गुण है ।
7. भाषा साहित्यिक होते भी कहीं क्लिष्ट नहीं होने पाई है ।
8. सूत्र कथनों की भाषा तत्समता लिए हुए है । इसमें गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति है ।
9. उर्दू और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग हुआ है ।
10. यत्र-तत्र कहावतों और मुहवरों का प्रयोग भी मिलता है ।

शैली

'तमस' उपन्यास में शैली के निम्नलिखित रूप मिलते हैं :

क. विश्लेषाणात्मक शैली
ख. भावात्मक शैली
ग. विवेचनात्मक शैली

घ. वर्णात्मक शेली
ङ. चरित्र-चित्रण शैली
च. नाटकीय शैली
छ. चित्रात्मक शैली
ज. मनोविश्लेषण शैली ।

26.4. पात्रानुकूलता

कथानक में सभी स्तर और वर्गों के पात्र होते हैं और सभी एक समान भाषा नहीं बोलते । साथ ही परिस्थिति और वातावरण के अनुसार भी पात्रों की भाषा में अंतर हो जाता है । निम्नलिखित उदाहरणों में लीजा अंग्रेजी बोलती है :

'नो इट इजन्ट देयर !' लीजा बोली । बाबू को सिर से पैर तक झुरझुरी हुई । झेंप में उसके मुस्कराते होंठ कांप रहे थे ।

'यू आर नो हिन्दू, यू टोल्ड ए लाई !'

'नो मैडम, आई एम एक हिन्दू, ए ब्राह्माण हिन्दू !'

'ओ नो, दैन वेयर इज युअर टफ्ट ?'

बाबू डर रहा था । शहर में दंगे की आशंका था और कठिनाई से बचता हुआ दफ्तर पहुँचा था । पर लीजा की बात सुनकर वह आश्वस्त-सा महसूस करने लगा । काले चेहरे में उसके सफेद दाँतों की लडी चमक उठी ।

'आई हैव नो टपट मैडम ।'

'दैन यू आर नो हिन्दू !'

लीजा ने अपनी तर्जनी उसकी ओर हिलाते हुए हँसकर कहा, 'यू टोल्ड ए लाई !'

'नो मैडम, आई एम एक हिन्दू ।'

'टक ऑफ युअर कोट, बाबू !' लीजा ने कहा ।

'ओह मैडम !' बाबू झेंप गया ।

'टेक ऑफ, टेक ऑफ हरी ।'

बाबू ने मुस्कराते हुए कोट उतार दिया ।

'वेरी गुड, नाउ अन्बटन युअर शर्ट !'

'वॉट मैडम ?'

'डोन्ट से वॉट मैडम, से आई बेग युअर पार्डन मैडम । ऑल राइट, अन्बटन युअर शर्ट ?'

बाबू नःसाहाय-सा लीजा के सामने खड़ा रहा, फिर नकटाई के नीचे हाथ डालकर एक-एक करके तीन बटन खोल दिये ।

'शो मी युअर थ्रेड ।'

'वॉट मैडम ?'

'युअर थ्रेड, वॉट मेडेम ! शो मी युअर हिन्दू थ्रेड !'

इसी प्रकार वन्तो पंजाबी बोलती है :

''सुण भागे भारिये, असाँ कदे किसे दा बुरा नहीं चेतिया, बुरा नहीं कीता । इत्यो दे लोकी बी साडे नाल भरावाँ बाँग रहे हन । तेरियाँ अखाँ साहमणे करीम खान दस वारा कह गिया है : चुपचाप बैठे रहवी, तुहाडे वल कोई अँख चुक के वी नहीं वखणया । करीमखान तों बड़ा मोतबर इत्थे कौण है ? इक्को इक इत्थे सिख घर है ? के गिराँवालियाँ नूं सॉडे ते हत्थ चुकदियाँ गैरत नहीं आयेगी ?'

करुण प्रसंगों की भाषा में स्निग्धता, भाव-प्रवणता और कोमलता कूट-कूट कर भरी हुई है । दंगाई खोह में छिपे इकबालसिंह के पत्थर मारते हैं । भाषा का प्रवाह करुण दृश्य उपस्थित कर देता है :

''सभी लोग उस ओर दौड़े । दो-तीन खोहों के अंदर एक साथ ढेले पड़ने लगे । एक खोह में एक ढेला सीधा सरदार के घुटने पर लगा, पर वह चिल्लाया नहीं और पीछे दुबककर बैठ गया । फिर धड़ाधड़ ढेले पड़ने लगे । कोई ढेला खोह की दीवार के साथ जा लगता, कोई सीधा उसके घुटनों पर या कहीं पर या माथे पर जा लगता । और सरदार सिसकर रह जाता । ढेले बराकर तीनों खोहों में पड़ते रहे । पर थोड़ी देर बाद एक खोह में से कराहने-बिलबिलाने की दबी-दबी आवाज आने लगी । अब हमलावरों को यकीन हो गया कि वह इसी खोह में दुबका बैठका है, और ढेलों की वौछार और तेज हो गयी ।''

26.5. स्वाभाविकता

'तमस' की भाषा में स्वाभाविकता है । भाषा वर्णन का सजीव चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम है । साथ ही वह पात्रों की स्थिति और वातावरण का चित्र भी उपस्थित कर देती है ।'तमस' की भाषा में उर्दू और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग हुआ है । लीजा और रिचर्ड के कथनों में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग हुआ है । रिचर्ड हेल्थ ऑफिसर से कहता है -

''देअर विल बी टाईम फार टी, मिसेज कपूर, बट नॉट नाओ, थेक यू !'' फिर उसी तरह अपनेपन के स्वर में बोला, ''बैल आपको भी थोड़ी-सी मदद करनी होगी । रिफ्यूजी कैम्प में दो हजार खाटें तो आज पहुंच जायेंगी, लेकिन कपड़ों वगैरा का थोड़ा इंतजाम करना जरूरी है ।'' और रिचर्ड ने फिर मुस्कराकर सिर हिला दिया ।''

मुसलमान पात्र तो उर्दू मिश्रित हिन्दी का प्रयोग करते ही हैं । यह प्रकृति अन्य वर्ग के पात्रों में भी पाई जाती है । निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है :

'' दो तीन बार रमजान ने कुल्हाड़ी उठाने की कोशिश की, पर कुल्हाड़ी हाथ में रहते भी उसे उठा नहीं पाया । काफिर को मारना और बात है, अपने घर के अंदर जान-पहचान के पनाहगजीन को मारना दूसरी बात । उसका खून करना पहाड़ की चोटी पार करने से भी ज्यादा कठिन हो रहा था । मजहबी जनून और नफरत के इस माहौल में एक पतली-सी लकीर कहीं पर अभी भी खिंची थी, जिसे पार करना बहुत ही मुश्किल था । उसे रमजान भी पार नहीं कर पा रहा था ।''

26.6. संस्कृत की तत्समता

साहनी ने स्थान-स्थान पर जीवन के सत्यों से पूर्ण वाक्यों का प्रयोग किया है । ऐसे स्थलों की भाषा में विशुद्धता है और

उसमें संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग हुआ है । निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है -

सचमुच ऐसा जान पड़ने लगा, जैसे शांति का लौकिक प्रभाव वायुमण्डल में छाने लगा है, चारों ओर शांति व्यापने लगी है और इन मुक्त कण्ठों से निकलने वाली शांति की ध्वनि घर-घर तक पहुंच रही है । 'अंतिम आहुति' में सचमुच सभी को बड़ा आनंद आता था । मंत्रोच्चारण के बाद एक प्रार्थना का गीत गाया जाता और उसमें भी समस्त चर-अचर जगत के सुख की कामना की जाती । ताली बजा-बजाकर वानप्रस्थीजी गा रहे थे -

''सब पर दया करो भगवान
सब पर कृपा करो भगवान ''

पुण्यात्माजी के आग्रह पर सत्संग में परंपरा आरती का गायन बहुत कम कर दिया गया था, क्योंकि उसमें 'मैं मूरख, खल कामी' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया था जो वानप्रस्थीजी के विचारानुसार हीन भावना पैदा करते थे, उसी तरह किन्हीं खन्नाजी का लिखा हुआ वह गीत भी निकाल दिया गया था जिसमें 'हम सब ही पुत्त कपुत्त तेरे' की चर्चा की गयी थी, जो वानप्रस्थीजी को मंजूर नहीं था ।

26.7. शैली

आलोच्य उपन्यास घटना प्रधान है । अतः वर्णात्मक शैली का ही अधिक प्रयोग हुआ है । चित्र विधायिनी वर्णात्मक शैली साम्प्रदायिक दंगों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम है ।

26.7.1. वर्णात्मक शैली

इस शैली में कथाकार किसी परिस्थिति, वस्तु, घटना अथवा पात्रों के बाह्य और आंतरिक चरित्र का उद्‌घाटन करता है । इस शैली में वर्णन चित्रात्मक और सजीव बन पड़े हैं । सारा कथानक

घटनाओं के वर्णन के सहारे विकसित हुआ है, अतः शैली में वर्णात्मकता अधिक है -

''तुर्क आये थे पर वे अपने ही पड़ोस वाले गाँव से आये थे । तुर्कों के जेहन में भी यही था कि वे अपने पुराने दुश्मन सिखों पर हमला बोल रहे हैं और सिखों के जेहन में भी वे दो सौ साल पहले के तुर्क थे, जिनके साथ खालसा लोहा लिया करता था । यह लड़ाई ऐतिहासिक लड़ाइयों की श्रृंखला में एक कड़ी ही थी । लड़ने वालों के पाँव बीसवीं सदी में थे, सिर मध्य युग में ।

घमासान युद्ध हुआ । दो दिन और दो रात तक चलता रहा । फिर असला चुक गया और लड़ना नामुमकिन हो गया । अब गुरुग्रन्थ-साहिब की चौकी के पीछे सफेद चादरों से ढकी सात लाशें पड़ी थीं । पाँच लाशों के सिर अपनी-अपनी गोद में रखे पाँच औरतें बैठी थीं । बहुत आग्रह करने पर कुछ देर के लिए वे उठ जाती, पर तेजसिंह के पीठ मोड़ने की देर होती कि वे फिर आ बैटती थीं । दो लाशों का बली वारिस कोई नहीं था । इनमें से एक लाश निहंगसिंह की थी जो उस समय भी, जब गोलियों की वौछार पड़ने लगी थी, मूंछों को ताव देता हुआ, छाती ताने छत पर खड़ा रहा था । दूसरी लाश सोहनसिंह की थी जो शहर से फिसाद रोकने के लिए आया था । यह आदमी गली के सिरे पर मारा गया था जहाँ वह लड़ाई के दूसरे दिन युद्ध रोकने का एक सुझाव पेश करने शेख गुलाम रसूल से मिलने जा रहा था । उसकी लाश वहीं पड़ी रहती पर कुछ मुसलमान, गहरी रात गये उसे गुरुद्वारे के नजदीक फेंक गये, सिखों को यह बताने के लिए कि यह है जवाब उस प्रस्ताव का जो तुमने सोहनसिंह के हाथ भेजा था । उसकी लाश एक ओर को पड़ी थी और उसे किसी ने गोद में नहीं ले रखा था । यों भी सोहनसिंह के मरने के कुद देर पहले सोहनसिंह और मीरदाद दोनों ही की स्थिति अमन कराने वालों की जगह मात्र हरकारों की स्थिति रह गयी थी ।''

वर्णात्मक शैली में लेखक ने वस्तु-वर्णन एवं घटनाओं के

सजीव चित्र उपस्थित कर दिये हैं । साम्प्रदायिक दंगे के विनाश का निम्नलिखित शब्द चित्र देखिए -

''कुछ लाशें कस्बे के बाहर भी जगह-जगह पड़ी थीं । एक लाश कुएँ के पास औंधी पड़ी थी । यह आदमी मुगालते में मारा गया था । यह कस्बे का भिस्ती अल्लाहरखा था, जो फिसाद के बावजूद अपनी मश्क लेकर चाँदनी रात में कुएँ पर चला अया था । शेख के घर में पानी का तोड़ा हो गया था और बच्चे पानी माँग रहे थे और तभी भिश्ती मश्क उठाकर पानी लेने आ गया था और शेख के घर की छत पर से ही सीधा अचूक निशाना उसकी पीठ पर लगा । एक लाश किसी सरदार की थी जो शहर से आने वाली सड़क पर पड़ी थी । फतहदीन नानवाई, जिसकी दुकान गुरुद्वारे को जाने वाली गली के बायें सिरे पर पड़ती थी, स्वयं तो बच गया था, लेकिन उसकी दुकान पर काम करने वाले दोनों छोटे-छोटे लड़के मारे गये थे । फिसादों के बावजूद ये बच्चे भाग-भागकर दुकान में से बाहर आ जाते थे । कभी एक-दूसरे के पीछे भागने लगते, कभी गली में खेलने लगते थे । इसके अलावा खालसा स्कूल में से आग के शोले अभी भी निकल रहे थे । बायीं गली के सिरे पर नदी के ऐन ऊपर वाले हिस्से में सिखों के सभी मकान आग की नजर कर दिये गये थे । दूसरी ओर कसाइयों की तीनों दुकानें, और तेली मुहल्ले के तीन-चार मुसलमानों के घर अभी भी जल रहे थे ।''

26.7.2. विवेचनात्मक शैली

विवेचनात्मक शैली का प्रयोग उन स्थलों पर हुआ है, जहाँ चिंतन या विवेचना का कोई गंभीर विषय होता है । निम्नलिखित उदाहरण में रिलीफ ऑफिस का विवेचन द्रष्टव्य है -

''रिलीफ ऑफिस के आँगन में घूमता प्रत्येक व्यक्ति अपना विशिष्ट अनुभव लेकर आया था । लेकिन उस अनुभव को जाँचने, परखने, उसमें रो निष्कर्ष निकालने की क्षमता किसी में न थी । शून्य में ताकने, सिर हिला-हिलाकर हर किसी की बात सुनते

रहने के अलावा किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था । एक अफवाह उठती तो आँगन में लोग उठ-उठकर उसे सुनने के लिए जमा हो जाते । कोई नहीं जानता था कि उसे क्या करना है, किधर जाना है । आगे क्या होगा, उसकी धुँधली-सी रूपरेखा भी किसी की आँखों के सामने नहीं थी । लगता जैसे कोई अनिवार्य घटना-चक्र चल रहा है, जिस पर किसी का कोई बस नहीं, न किसी के हाथ में निर्णय है, न संचालन, न संचालन की क्षमता, कठपुतलियों की तरह सभी घूम रहे थे, भूख लगती तो उठकर इधर-उधर से कुछ खा लेते, याद आती तो रो देते और कान लगाये सुबह से शाम तक लोगों की बातें सुनते रहते ।''

26.7.3. विश्लेषणात्मक शैली

पात्रों के मनोभावों के विश्लेषण में मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग होता है । जहाँ पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व उभरा है, वहाँ इसी शैली का प्रयोग हुआ है । सुअर मारने का अन्तर्द्वन्द्व नत्थू को सदैव कचोटता रहता है -

''नत्थू परेशान था । अपनी कोठरी के बाहर बेटा वह चिलम पर चिलम फूँके जा रहा था । जितना अधिक वह मार-काट की अफवाहों को सुनता, उतना ही अधिक उसका दिल बैठा जाता । बार-बार अपने मन को समझाता, मैं अंतर्जामी तो नहीं हूँ, मुझे क्या मालूम किस काम के लिए मुझसे सुअर मरवाया जा रहा है । कुछ देर के लिए उसका मन ठिकाने भी आ जाता, लेकिन फिर जब किसी घटना की बात सुनता तो फिर बेचैन होने लगता । यह सब मेरे किये का फल है । सभी चमार सुबह से एक-दूसरे की कोठिरियों के बाहर बीड़ियाँ फूँकते बतियो रहे थे । नत्थू बार-बार उनके बीच जा खड़ा होता । वह स्वयं भी बतियाने की कोशिश करता, लेकिन बार-बार उसका हलक सूखने लगता और टाँगे काँपने लगती और वह अपनी कोठरी में लौट आता । क्या मैं अपनी पत्नी से सारी बात कह दूँ ? वह समझकर औरत है, मेरी

बात समझ जायेगी, मेरा दिल हल्का होगा । कभी उसका मन चाहता शराब का पौवा कहीं से मिल जाता तो कुछ देर के लिए बेसुध पड़ा रहता । पर इस वक्त शराब कहाँ मिलने वाली थी ? औरत को बताना भी जोखिम मोल लेना था । बातों-बातों में उसने किसी से कह दिया तो ? फिर क्या होगा ? मुझे कोई छोड़ेगा नहीं । क्या मालूम पुलिस ही मुझे पकड़कर ले लाये ? फिर क्या होगा ? मेरी बात कौन मानेगा कि मुरादअली के कहने पर मैंने ऐसा काम किया है ।''

26.7.4. भावात्मक शैली

भावात्मक शैली का प्रयोग भी 'तमस' उपन्यास में अनेक स्थलों पर हुआ है । सारा कथानक साम्प्रदायिक विनाश और अतिक्रन्दन से भरा हुआ है । आतताइयो से सम्मान-रक्षा के लिए स्त्रियों के कुएँ में कूदने का निम्नलिखित दृश्य बड़ा ही कारुणिक है -

''स्त्रियों का झुण्ड उस पक्के कुएँ की ओर बढ़ता जारहा था, जो ढलान के नीचे दायें हाथ बना था, और जहाँ गाँव की स्त्रियाँ नहाने, कपड़े धोने, बतियाने के लिए जाया करती थीं । मंत्र-मुग्ध-सी सभी उस ओर बढ़ती चली जा रही थीं । किसी को उस समय ध्यान नहीं आया कि वे कहाँ जा रही हैं, क्यों जा रही हैं । छिटकी चाँदनी में कुएँ पर जैसे अप्सराएँ उतरती आ रही हों ।

सबसे पहले जलबीर कौर कुएँ में कूद गयी । उसने कोई नारा नहीं लगाया, किसी को पुकारा नहीं, केवल 'वाहगुरू' कहा और कूद गयी । उसके कूदते ही कुएँ की जगत पर कितनी ही स्त्रियाँ चढ़ गयीं । हरिसिंह की पत्नी पहले जगत के ऊपर जाकर खड़ी हुई, फिर उसने अपने चार साल के बेटे को खींचकर ऊपर चढ़ा लिया, फिर एक साथ हो, उसे साथ से खींचती हुई नीचे कूद गयी । देवसिंह की घरवाली दूध पीते बच्चे को छाती से लगाये ही

कूद गयी । प्रेमसिंह की पत्नी खुद तो कूद गयी, पर उसका बच्चा पीछे खड़ा रह गया । उसे ज्ञानसिंह की पत्नी ने माँ के पास धकेलकर पहुँचा दिया । देखते-ही-देखते गाँव की दसियों औरतें अपने बच्चों को लेकर कुएँ में कूद गयीं ।

26.8. बोध प्रश्न

1. उपन्यास 'तमस्' की उपन्यास विशेषताओं के बारे में एक लेख लिखिए ।
2. साहनी जी की भाषा-शैली के बारे में वर्णन कीजिए ।

ತಪೀಶ ಸಂಖ್ಯೆ : ಕರಾಮುವಿ/ಅಸಾವಿ/4–060/2013–2014 ದಿನಾಂಕ : 24–09–2013
ಒಳಪುಟ : 60 GSM MPM ವೈಟ್ ಪ್ರಿಂಟಿಂಗ್ ಪೇಪರ್ ಮತ್ತು ಹೊರಪುಟ: 170 GSM ಆರ್ಟ್‌ಕಾರ್ಡ್
ಮುದ್ರಕರು : ಅಭಿಮಾನಿ ಪಬ್ಲಿಕೇಷನ್ ಲಿ., ಬೆಂಗಳೂರು–10 ಪ್ರತಿಗಳು : 1,200

Karnataka State Open University

Manasagangotri Mysore - 570 006

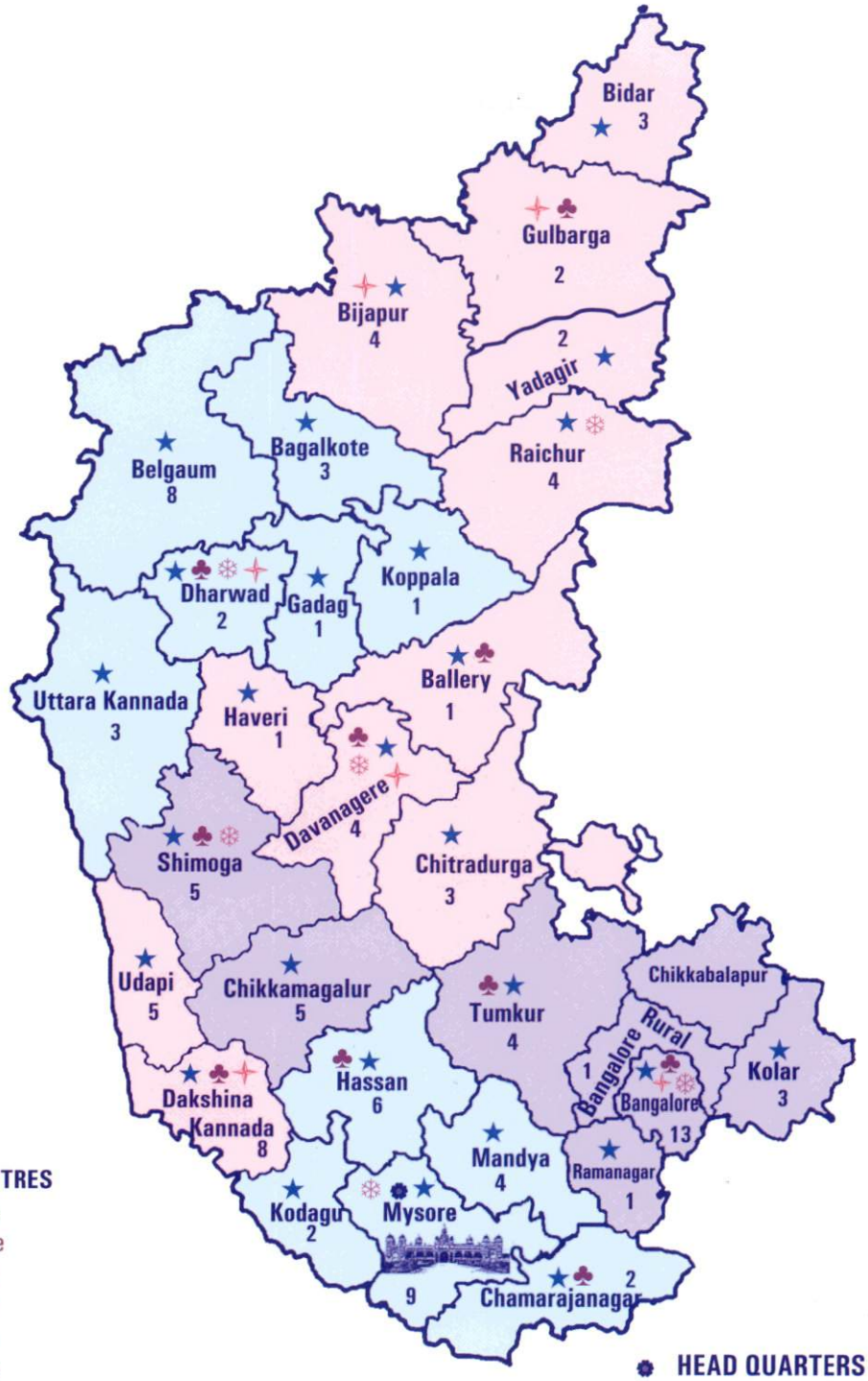

REGIONAL CENTRES

Bangalore
Davanagere
Gulbarga
Dharwad
Shimoga
Mangalore
Tumkur
Hassan
Chamarajanagar
Bellary

HEAD QUARTERS

★ Total Study Centres : 111

♣ Regional Centres : 10

❄ B.Ed Study Centres : 10

✦ M.Ed Study Centres : 08

Karnataka State Open University

Manasagangothri, Mysore - 570 006.

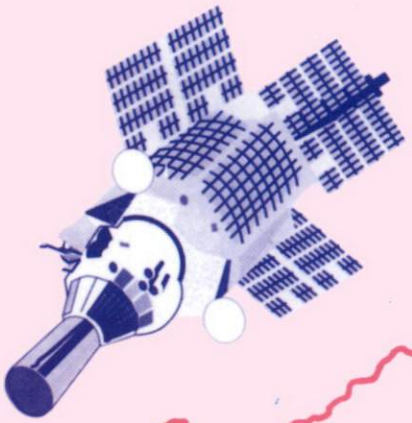

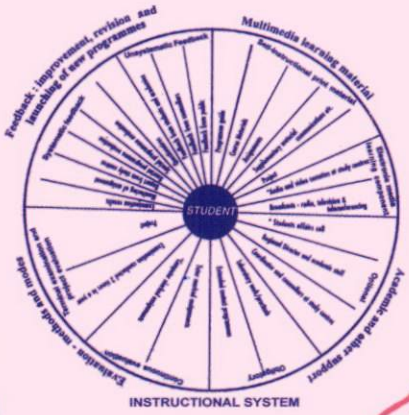

INSTRUCTIONAL SYSTEM

INSTRUCTIONAL SYSTEM